मार्च-२०२१ ◆ वर्ष ९ ◆ अंक ११ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मार्च-२०२१

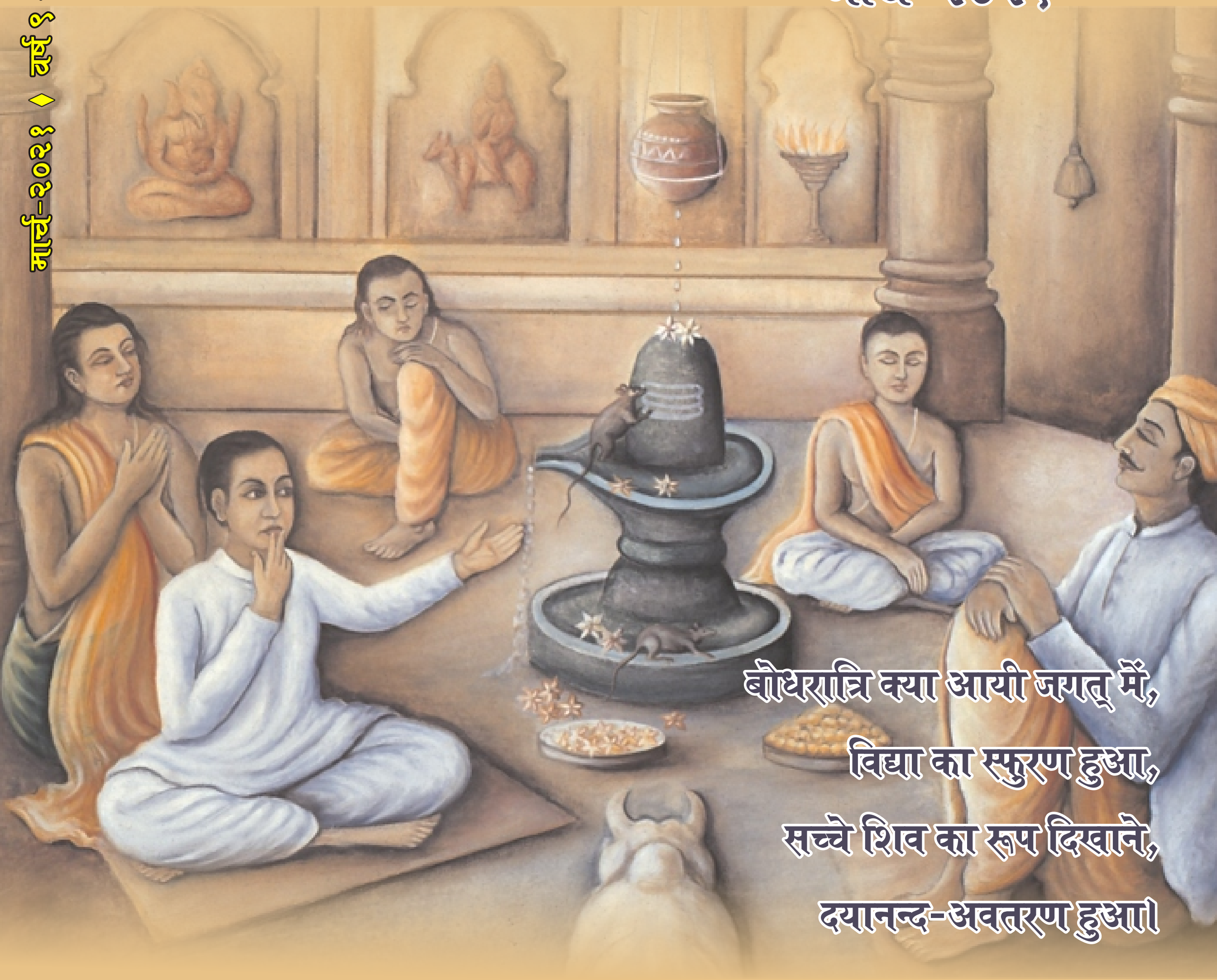

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ११३

आपका प्यार, आपका विश्वास
एमडीएच ने रचा इतिहास
1919·CELEBRATING·2019
1919·शताब्दी उत्सव·2019
100
Years of affinity till infinity
आत्मीयता अनन्त तक
MDH
मसालों में 100 साल की शुद्धता के जश्न
पर सभी ग्राहकों, वितरकों एवं शुभचिन्तकों को हार्दिक बधाई
महाशय धर्मपाल जी
पद्मभूषण से सम्मानित
विश्व प्रसिद्ध एमडीएच मसाले शुद्धता और गुणवत्ता की कसौटी पर खरे
भारत सरकार द्वारा "ITID Quality Excellence Award" से सम्मानित किया गया।
यूरोप में मसालों की शुद्धता के लिए "Arch of Europe" प्रदान किया गया।
"Reader Digest Most Trusted Brand Platinum Award" भी प्रदान किया गया।
The Brand Trust Report ने वर्ष 2013 से 2019 तक लगातार
5 वर्षों के लिए ब्रांड एमडीएच को India's Most Trusted Masala Brand
& India's Most Attractive Brand का स्थान दिया है।
MDH मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच
KASHMIRI MIRCH
Sabzi masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Kitchen King
Chana masala
Sambhar masala
Shahi Paneer
Jal Jeera masala
महाशय जी ने बड़े पैमाने पर समाज और मानव जाति की सेवा के लिये व्यवसाय को समर्पित किया है। एक सर्वश्रेष्ठ उद्योगपति होने के साथ साथ वह न केवल एक परोपकारी व्यक्ति हैं बल्कि समाज के कमजोर वर्ग के लिये ताकत और समर्थन का एक स्तम्भ भी हैं। एमडीएच एक कंपनी ही नहीं वह एक संस्था है एक विशाल परिवार है जोकि अपने सहयोग से 70 से अधिक सामाजिक संस्थाएं जैसे स्कूल, अस्पताल, गौशालाएँ, वृद्धाश्रम, अनाथालय, गरीब छात्रों, विधवाओं एवं गरीब परिवारों एवं आर्य समाज इत्यादि कई सामाजिक संगठनों की आर्थिक रूप से महाशय धर्मपाल चैरिटेबल ट्रस्ट और महाशय चुन्नीलाल चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से मदद करते हैं।
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)
दीनदयाल गुप्त (कोलकाता)
सुरेश चन्द्र आर्य (अहमदाबाद)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग (मो.7976271159)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२०
फाल्गुन कृ.
विक्रम संवत्
२०७७
दयानन्दाब्द
१९७

March - 2021

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000	रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000	रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750	रु.

समाचार २८

हलचल २९

०४ वेद सुधा
१५ परोपकारिणी सभा की स्थापना
१८ क्या अण्डा सेवन शाकाहारी है?
२२ चमत्कार को दूर से करें नमस्कार
२५ सृष्टि विज्ञान की महत्ता
२६ कथा सरित- वैदिक धर्म ...
२७ स्वास्थ्य
३० प्रार्थना का प्रकार

स्वामी: श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ९ अंक - ११

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

पूर्वजों के मार्ग पर चल

मैतं पन्थामनु गा भीम एष येन पूर्वं नेयथ तं ब्रवीमि।
तम एतत्पुरुष मा प्र प्रत्था भयं परस्तादभयं ते अर्वाक्।। - अथर्व. ८/१/१०

एतम् पन्थाम्- इस मार्ग पर, मा अनु+गाः- मत चल, एषः भीमः- (क्योंकि) यह भीम (है)। येन- जिस (मार्ग) से, पूर्वम्- पहले, नेयथ- ले जाया गया, तं ब्रवीमि- उसे बताता हूँ। पुरुष- हे पुरुष! नागरिक! एतत् तमः- इस अन्धकार को, मा प्र+पत्थाः- मत प्राप्त हो अथवा इस अन्धकार में मत गिर। परस्तात् भयम्- पिछली ओर भय (है)। अर्वाक्- इस ओर ते अभयम्- तुझे अभय (है)।

व्याख्या

जीवन का मार्ग बहुत बीहड़ और भयानक है। इसमें बड़े-बड़े समझदार कहे और समझे जानेवाले महानुभाव भटक जाते हैं, मार्गभ्रष्ट हो जाते हैं, साधारण जनों का तो कहना ही क्या है? कः पन्थाः? मार्ग कौन-सा है? यह सनातन प्रश्न है। सब कालों और सब देशों में यह प्रश्न विचारकों के सामने आया है। बहुत थोड़े ऐसे भाग्यवान् हैं, जो इस प्रश्न का पूरा समाधान कर सके हैं और तदनुसार जीवन यात्रा कर सके हैं।

मैतं पन्थामनुगाः- मत इस राह पर चल।

सभी मनुष्यों का यह अनुभव है कि कठोर कर्तव्य के समय उन्हें सांसारिक मोह घेर लेता है। न्यायाधीश का अपना पुत्र अपराधी के रूप में उसके सामने उपस्थित किया जाता है। अपराध प्रमाणित हो जाता है, किन्तु सुत-मोह, पुत्र-प्रेम जब न्याय के मार्ग में आ खड़ा होता है, वह न्याय नहीं करने देता। क्या वह-

गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्। कानून भंग करनेवाले को, चाहे वह धर्मोल्लंघन करनेवाला पुत्र हो या शत्रु हो- न्याय व्यवस्थानुसार अवश्य दण्ड देता है? न! न! वह फिसल जाता है। वह मार्ग छोड़ बैठता है। वह उस मार्ग पर चलता है, जिसके लिए वेद कहता है-

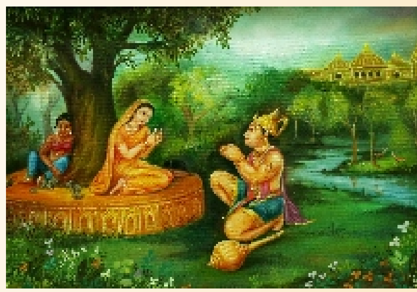

मैतं पन्थामनु गाः- मत इस राह पर चल।

मनुष्य जीवन का लक्ष्य क्या है?

क्या खाना, पीना, भोग करना और बस?बहुत पुराने काल में रावण ने भगवती सीता से कहा था-

'भुङ्क्ष्व भोगान् यथाकामं पिब भीरु रमस्व च।' - वा. रा., सुन्दर काण्ड, २०/२४

सीते! यथेच्छ भोग भोग! खा, पी और मौज कर।

'पिब विहर रमस्व भुंक्ष्व भोगान्।' - वा.रा. सुन्दरकाण्ड २०/३५

पी, विहार कर, रमण कर, भोगों को भोग।

किन्तु सीता माता ने वेद में पढ़ रखा था-मैतं पन्थामनुगाः।

सीता इस मार्ग पर न चलीं, राक्षस रावण के प्रणय-प्रलाप को उन्होंने ठुकरा दिया। भोग भोगना मनुष्य का धर्म नहीं। क्या मनुष्य भोग में- खान-पान आदि विषयों में- पशुओं की समता कर सकता है? क्या कोई हाथी के बराबर खा सकता है?

भोग तो राक्षसों का धर्म है। स्वयं रावण ने कहा-

स्वधर्मो रक्षसां भीरु सर्वथैव न संशयः।
गमनं वा परस्त्रीणां हरणं संप्रमथ्य वा।। - वा.रा. सुन्दरकाण्ड २०/५

हे धर्मभीरु सीते! परस्त्रीगमन (व्यभिचार) = भोग, परदाराहरण यह तो राक्षसों का स्वधर्म है। तो क्या हम राक्षस बनें? वेद कहता है- न भाई! भीमः एषः- यह मार्ग भंयकर है। आज भी जो 'eat, drink and be merry' खाओ, पिओ, आनन्द करो का उपदेश करते हैं, वे रावण का समर्थन करते हैं, राक्षस धर्म का प्रचार करते हैं।

जब जीवन यात्रा के लिए मनुष्य तैयार होता है, तब उसके सामने दोराहा आता है। एक मार्ग पर सब लुभावनी सामग्री नाच, गान, स्त्री, खान-पान आदि होता है, दूसरे पर ऐसा कुछ दीखता नहीं। मनुष्य- साधारण मनुष्य=अपरिपक्व विवेकवाला मनुष्य, पहले मार्ग को चुनता है। कारण दो हैं- मन्दमति और सांसारिक लालसाओं की पूर्ति की सम्भावना।

यम ने नचिकेता को इस दोराहे की बात भली-भांति समझाई थी। उसने कहा था-

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतः। - कठो. १/२/२

श्रेयोमार्ग और प्रेयोमार्ग दोनों ही मनुष्य को मिलते हैं, किन्तु-

प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते। - कठो. १/२/२

मन्दमति मूर्ख, योगक्षेम के कारण- सांसारिक भोगभावना के कारण- प्रेयोमार्ग को पसन्द करता है। मूर्ख दोनों का भेद नहीं जानता, वह उनमें पहचान नहीं कर पाता। पहचान तो धैर्यवान्, विचारशील ही कर सकता है।

तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः। - कठो. १/२/२

धीर मनुष्य ही उन दोनों- श्रेय और प्रेय मार्गों की जांच करके भेद कर सकता है, पहचान कर सकता है?

महाज्ञानी- मूढ़ ही इस प्रेयोमार्ग पर चलते हैं। यम कहता है-

अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः।
दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।। - कठो. १/२/५

जो अविद्या में फंसे हैं, किन्तु अपने आपको ध्यानी और पण्डित मान रहे हैं, ऐसे दुरवस्था में ग्रस्त महामूढ़ लोग ही इस मार्ग पर चलते हैं। वे स्वयं अन्धे हैं, अन्धों ही के पीछे चल रहे हैं।

वेद कहता है, मत चल इस मार्ग पर। तुझे मैं मार्ग बताता हूँ। पहले भी इसी मार्ग से तुझे और तेरे बड़ों को चलाया था-

येन पूर्वं नेयथ तं ब्रवीमि।

अरे! यह अन्धकार से ढका है। अन्धकार मृत्यु है। प्रकाश जीवन है। तू अन्धकार में मत फंस। भगवान् ने कहा-

तम एतत् पुरुष मा प्रपत्थाः।

नगर के रहने वाले! यह अन्धकार है, इसमें मत गिर। नगरवासी तो प्रकाश का अभ्यासी है। पुरुष की यह नगरी देह- ज्योति से आवृत है। प्रकाश से ओत-प्रोत का अन्धकार में गिरना लज्जास्पद है। यदि संसार-पथ=प्रेयोमार्ग=भोगपद्धति इतनी भयावह है, तो ऐसा हमें प्रतीत क्यों नहीं होता? इस पुराने प्रश्न की मीमांसा यम ने इस प्रकार की है-

न साम्परायः प्रतिभाति बालं प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढम्।
अयं लोको नास्ति पर इति मानी पुनः पुनर्वशमापद्यते मे। - कठो. १/२/६

यह साम्पराय- आनी-जानी दुनिया=विनश्वर संसार बालक को=मूढ़ अज्ञानी को नहीं दिखता, प्रमादी को भी नहीं सूझता। भर्तृहरि के शब्दों में उसने तो शराब पी रखी है-पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत्। प्रमाद की मोहक मदिरा=शराब पीकर संसार पागल हो रहा है। धन के मद में मत्त भी इसको नहीं देखता। धन का नाश बड़ा तीव्र होता है। इन तीनों की दृष्टि इस संसार से परे नहीं जाती। वे इस लोक एवं अपने देह को ही सब-कुछ समझते हैं, अतः जन्म मरण के चक्कर में फंसे रहते हैं।

वेद कहता है-

'भयं परस्तात्' अरे! पीछे तो भय है। अतः इस पर मत चल।

अभयं ते अर्वाक्- इस ओर अभय है। आ, इधर चल।

साभार-स्वाध्याय सन्दीप

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतनलाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, श्री सुदर्शन कुमार कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद

आशुतोष का ताण्डव

आशुतोष एक पत्रकार के रूप में जाने जाते हैं। पर आज निष्पक्ष और निर्दोष पत्रकारिता के दिन लद गए प्रतीत होते हैं। आज प्रायः पत्रकार अपने एजेंडे को प्रवर्तित करने में जुटे रहते हैं। आशुतोष ऐसे पत्रकारों की प्रथम पंक्ति में स्थापित हैं, यह बात तब और भी स्पष्ट हो गयी जब ये महोदय 'सी.एन.बी.सी आवाज' के एक डिबेट कार्यक्रम में, जिसमें एक बेव सीरिज तांडव के उन दृश्यों पर चर्चा चल रही थी जिनमें फिल्मकार ने शिव के चरित्र को अत्यंत अशोभनीय रूप में प्रस्तुत किया था और शिव के मुंह से गाली भी दिलवायी। अथवा ऐसे ही अन्य प्रसंग जिनमें हिन्दुओं के मध्य जातिगत विभेद को आपत्तिजनक रूप से प्रस्तुत किया था, पर चर्चा चल रही थी। जब आशुतोष की बारी आयी, तो अप्रत्याशित रूप से उन्होंने आर्यसमाज के संस्थापक, वैदिक संस्कृति के पवित्रतम रूप के प्रस्तोता, भारत के उज्ज्वल अतीत के गायक और विश्व शान्ति की स्थापनार्थ मानवमात्र को वेद की छाँव में लाने हेतु समुत्सुक महर्षि दयानन्द जी महाराज को इस रूप में प्रस्तुत किया जैसे महर्षि दयानन्द हिन्दू समाज के सर्वाधिक बड़े दुश्मन रहे हों। विद्वानों लेखकों और भारतीय ही नहीं विदेशी चिंतकों ने जिस महामना को खुले दिल से हिन्दू समाज का सर्वाधिक सशक्त रक्षक माना हो उसे इस रूप में प्रस्तुत करना आशुतोष की धूर्तता नहीं तो क्या है? आशुतोष द्वारा महर्षि दयानन्द का, ताण्डव सीरिज के संदर्भ में, इस प्रकार उल्लेख किया गया जैसे इस सीरिज के निर्माता और दयानन्द एक ही श्रेणी पर खड़े हैं। इससे बड़ा झूंठ और इससे बड़ी मक्कारी कुछ हो नहीं सकती। ऐसा प्रतीत होता है कि आशुतोष ने या तो सतही तौर पर महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व को जाना है अथवा सब कुछ जानते हुए जानबूझकर बिना कोई प्रमाण प्रस्तुत किये स्वामी दयानन्द को इस रूप में प्रस्तुत किया कि वे नवयुवक जो स्वामी दयानन्द के भारतीय संस्कृति को दिए अवदान से परिचित नहीं हैं वे अनजाने में स्वामी दयानन्द के प्रति नकारात्मक भाव रखने लग जायं और संस्कृति के रक्षक को भक्षक समझने लग जायं।

इसी कार्यक्रम में संत कबीर को उद्धृत करते हुए आशुतोष ने यह कहते हुए-

पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहार।
याते तो चाकी भली, जो पीस खाय संसार।।

प्रयास किया कि आज का हिन्दू युवा जो मूर्ति-पूजक हिन्दू समुदाय का सदस्य है वह कबीर को हिन्दू विरोधी मानने लग जाय। यहाँ आशुतोष ने कबीर की निम्न वाणी को प्रस्तुत नहीं किया जिससे संत कबीर का समग्र स्वरूप स्पष्ट होने से, शिक्षित युवा कबीर की निष्पक्षता और अंधविश्वासों पर प्रहारक वाले रूप को समझ सके। दोहा है-

कांकर पाथर जोरि के, मस्जिद लई चुनाय।
ता उपर मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।

अगर स्वनामधन्य पत्रकार इस दोहे को प्रस्तुत करते तो उन्हें यह भी कहना पड़ता कि कबीर मुस्लिम विरोधी थे और यह उनके एजेंडे को प्रवर्तित नहीं करता था। सच बात तो यह है कि मानवमात्र के कल्याण की भावना से इन मनीषियों ने निष्पक्ष भाव से बाह्य आडम्बरों का, अंधविश्वासों का विरोध किया जो धर्म के मूल तत्व कदापि नहीं थे। यही बात महर्षि दयानन्द पर लागू है। अंतर यही है कि कबीर ने जो

कहा उसका आधार उनकी अन्तश्चेतना थी वहीं स्वामी जी क्योंकि ईश्वरीय वाणी के साक्षात्कर्ता थे अतः उन्होंने अपने समस्त मत का आधार वेद को बनाया और वेद-विरुद्ध मान्यताएं चाहे वे हिन्दू धर्म में कालांतर में प्रविष्ट हो गयीं हों अथवा ईसाई मत वा मुस्लिम मत में प्रारम्भ से उपस्थित रहीं हों, का खंडन किया। स्वामी दयानन्द ने विशुद्ध सत्य को प्रस्तुत किया और ऐसा करने में मानव मात्र के कल्याण की भावना ही उनके हृदय में थी। अतः हे आशुतोष जी! सत्यार्थ प्रकाश के १३वें व १४ वें समुल्लास के प्रणयन के बावजूद स्वामी जी न ईसाई मत के और न इस्लाम के विरोधी थे तब हिन्दुओं के विरोध की तो कथा ही क्या? इस बात को समझने का प्रयास करना चाहिए। आपकी सोच के अनुसार तो जिन महात्माओं ने बाल विवाह और बहु विवाह का विरोध किया, स्त्री शिक्षा का समर्थन किया, विधवा विवाह का समर्थन किया, दलितों को गले लगाया, जन्मगत जातिप्रथा का विरोध किया वे सब हिन्दू धर्म के विरोधी थे। एक पढ़े लिखे पत्रकार की ऐसी सोच दिवालिया ही कही जायेगी।

गैलीलियो ने पृथ्वी को गोल बताया। यह मत बाइबिल की मान्यता के विरुद्ध था। तब ईसाइयों ने गलीलियो को धर्म-विरोधी माना। पर क्या आज कोई यह कहने का साहस करेगा कि गैलीलियो ईसाई मत का विरोधी था। अगर संसार में यह प्रथा हो गयी तो कौन सत्य-कथन करेगा? स्वामी दयानन्द ने सत्य के लिए अपने प्राणों को त्याग दिया। संभवतः आशुतोष जैसे मलाई के पीछे भागने वाले लोग तो यह सोच भी नही सकते कि सत्यकथन के प्रति समर्पित ऐसे महान् चरित्र के व्यक्ति भी हो सकते हैं जो मेवाड़ के अधिष्ठाता एकलिंग महादेव की गद्दी को ठुकरा सकते हैं परन्तु असत्य से मामूली समझौता उन्हें स्वीकार्य नहीं। ऐसे अनेकों प्रलोभनों को ठुकरा देने वाले महानात्मा थे महर्षि दयानन्द सरस्वती। वे लोग अंधे हैं वा बुद्धि विहीन जो स्वामी दयानन्द को हिन्दू विरोधी के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह ठीक है कि जिस समय लोग विद्या के अभाव में यह मान लेते थे कि संस्कृत में जो कुछ भी लिखा है वह ऋषियों का लिखा है, मान्य है, वहां ऋषि दयानन्द विवेक के प्रयोग का आग्रह करते हैं और लिखते हैं कि जो कुछ भी वेदों के अनुकूल इस प्रकार के ग्रंथों में है वही मान्य है शेष वेद-विरुद्ध, सृष्टिक्रम से विरुद्ध अथवा असंभव होने से अमान्य है। महर्षि दयानन्द ने ही संभवतः साहित्य में तथा ग्रंथों में प्रक्षेप सिद्धांत को सर्वप्रथम प्रवर्तित किया ताकि प्रक्षिप्त भाग का त्याग किया जा सके। इसी कारण वे मनुस्मृति को आर्ष पाठ्यक्रम में सम्मिलित करते हुए उसके प्रक्षिप्त श्लोकों को त्याग देने का निर्देश करते हैं। पुराणों को भी व्यास मुनि द्वारा रचित कहे जाने का विरोध करते हुए उन्होंने कहा -

'जो अठारह पुराणों के कर्त्ता व्यास जी होते तो उनमें इतने गपोड़े न होते। क्योंकि शारीरक सूत्रों, योगशास्त्र के भाष्य आदि व्यासोक्त ग्रन्थों के देखने से विदित होता है कि व्यास जी बड़े विद्वान्, सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। वे ऐसी मिथ्या कथा कभी न लिखते। पुराणों में जिन स्थलों पर हमारे महापुरुषों के चरित्र को विकृत किया गया है, उनका खण्डन अथवा इन्हें त्यागने का आग्रह कोई भी सच्चा हिन्दू (आर्य) करेगा ही। यही महर्षि ने किया।

अपने घर से धूल मिटटी तथा हानिकारक तत्वों को दूर कर घर को शोभनीय रूप में दिखाने के अभिलाषी को, उस गृह का दुश्मन कौन कहेगा? अपने ही बुजुर्गों पर अगर कोई मिथ्या आरोप लगाकर पुस्तक लिखे तो यदि उस पुस्तक में वर्णित मिथ्या आरोपों का निराकरण अपराध है तो यह अपराध दयानन्द ने अवश्य किया है। महर्षि दयानन्द ने वह शुद्ध और पवित्र दृष्टि आर्य संस्कृति के उपासकों और भारतीय मनीषा के ध्वजवाहकों को दी जिससे वे इन प्रक्षेपों को स्पष्ट देख सकें और उनसे दूरी ही न बनावें वरन् उन स्थलों को खंडित कर सकें। केवल इसी भावना से उन्होंने पुराणों के ऐसे स्थलों का विरोध किया है जो हमारे ही पूर्वजों को कलंकित करने के लिए, समय के प्रवाह में वाम-मार्गियों द्वारा आरोपित किये थे। यह सब हिन्दू धर्म को खरे सोने की भाँति चमकाने के लिए था न कि उसे धुंधला करने के लिए। ऐसा महापुरुष हिन्दू- विरोधी कैसे हो सकता है? यही कारण है कि विश्व भर के मनीषियों ने स्वामी दयानन्द को हिन्दुओं का रक्षक माना है और ये मनीषी आर्यसमाजी भी नहीं थे अतः इनकी राय को इस क्षेत्र के विशेषज्ञ लोगों की निष्पक्ष राय मानकर स्वीकार किया जा सकता है, और श्री आशुतोष जी आप भी ऐसा ही करें तभी आप भगवान दयानन्द पर लगाए असत्य तथा अनर्गल आरोपों के पाप से मुक्त हो पायेंगे। कुछ बानगी नीचे देखें-

कविवर रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं-

'जैसे राजनीति के क्षेत्र में हमारी राष्ट्रीयता का सामरिक तेज पहले तिलक में प्रत्यक्ष हुआ वैसे ही संस्कृति के क्षेत्र में भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानन्द ने निखारा। जो बात राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन और रानाडे आदि के ध्यान में नहीं आई, उसे लेकर ऋषि दयानन्द और उनके शिष्य आगे बढ़े और घोषणा की कि कोई भी हिन्दू (आर्य) धर्म में प्रवेश कर सकता है। हमारा गौरव सबसे प्राचीन और सबसे महान् है-यह जागृत हिन्दुत्व का महासमरनाद था। रणारूढ़ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई भी नहीं। दयानन्द के समकालीन अन्य सुधारक केवल सुधारक थे किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आगे बढ़े। वे हिन्दू धर्म के रक्षक होने के साथ ही विश्वमानवता के नेता भी थे।' (संस्कृति के चार अध्याय)

दयानन्द हिन्दुओं में प्रमुख हिन्दू थे।... उन्हें हिन्दुओं में हिन्दू कहना इसलिए सार्थक है क्योंकि प्रथम तो वे हिन्दू धर्म के अनुयायी थे और अपने देश के एक वफादार नागरिक थे। उनके मन में दो धारणायें प्रबलता से बद्धमूल हो गई थीं। प्रथम हिन्दू होने की, दूसरी भारतीय होने की। -जे.रीड ग्राहम

ग्राहम आर्यसमाज और ब्राह्मसमाज की तुलना करते हुए लिखते हैं। जिन लोगों ने उनके अनेक प्रवचन सुने थे वे ये अनुभव करते थे कि दयानन्द हिन्दू धर्म की विकृतियों की ही निन्दा कर रहे हैं। इसलिए नहीं कि हिन्दू धर्म को नष्ट किया जाये, अपितु उसे बचाया जाये, उसका सुधार किया जाये जिससे कि हिन्दुओं को ऐसी नवीन शक्ति मिले ताकि वे ईसाइयत और इस्लाम के हमलों को रोकने में समर्थ हों। उन्हें भय था कि अगर ऐसा नहीं किया गया तो ईसाइयत और इस्लाम भारत में प्रभावपूर्ण स्थिति में आ जायेगा। -जे.रीड ग्राहम

दयानन्द मौलिक हिन्दू धर्म से उतनी दूर नहीं हटे थे जितने ब्रह्मसमाजी। वे (ब्रह्मसमाजी) वेदों और उपनिषदों की भांति कुरान और बाइबिल को पढ़ने के लिए तैयार रहते थे। दयानन्द ने कर्मवाद, पुनर्जन्म आदि के हिन्दू धर्म में सर्वस्वीकृत सिद्धान्तों को यथावत् स्वीकार कर लिया, जबकि ब्रह्मसमाज ने उन्हें पूर्णतया अमान्य कर दिया था। दयानन्द ने अधिकांश हिन्दू देवी देवताओं के नामों को एक परमात्मा के नाम के रूप में स्वीकार किया जबकि ब्रह्मसमाज ने इन नामों को ईश्वर का नाम मानने से इन्कार कर दिया। दयानन्द के अधिकांश समाजिक विधान मनुस्मृति पर आधारित हैं जो हिन्दुओं का सर्वमान्य विधि ग्रन्थ है।

हम दयानन्द को हिन्दुओं में विशिष्ट हिन्दू कहते हैं। वे यह शीघ्र घोषित कर देते हैं कि अन्य सम्प्रदायों के धार्मिक विश्वास मिथ्या हैं जबकि हिन्दू धर्म तो व्यापक है, सहिष्णु है तथा व्यावहारिक रूप में सबको स्वयं में समाविष्ट करने वाला है। -जे.रीड ग्राहम

'सिद्धान्तों और नीति में दयानन्द ने स्वयं को परम्परा से प्राप्त हिन्दू धर्म के इतने निकट रखा है कि सनातन धर्म से आर्य समाज में प्रविष्ट होने वाले को किसी हिंसात्मक टूटन का अनुभव नहीं होता।' -एच.डी.ग्रिसवोल्ड

'पंजाब में उन दिनों ब्रह्मसमाज सक्रिय था किन्तु आर्य समाज के प्रति लोगों का विशेष आकर्षण इसलिए था कि वह एक ऐसे धर्म का प्रचार कर रहा था जो किसी विदेशी प्रभाव से स्वयं को बचाकर पूर्णतः राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक बन गया था।

एक अन्य कारण जिसने आर्य समाज को वरीयता दिलाई, यह था कि इसके अनुयायियों को अपने मूल हिन्दू समाज से संबंध विच्छेद नहीं करना पड़ता था तथा यह भी कि आर्यसमाज के प्रबल आक्रामक कार्यक्रम ने हिन्दुओं को ईसाई मत तथा इस्लाम की ओर जाने से रोक दिया था। -चार्ल्स एच.हेसमेथ

ये पठित लोग हिन्दू धर्म के इस परिष्कृत संस्करण का स्वागत करते हैं तथा सान्त्वना का अनुभव करते हैं। (एक ब्रिटिश समीक्षक)

जे.टी.एफ. जार्डन्स लिखते हैं- उनके (दयानन्द के) जीवन का आरम्भिक काल मोक्ष की तलाश में व्यतीत हुआ और जीवन का उत्तरार्द्ध हिन्दू व्यक्ति और हिन्दू समाज को समर्पित रहा।

आशुतोष ने इसी कार्यक्रम में कहा कि 'स्वामी जी ने जो राम के लिए लिखा जो कृष्ण के लिए लिखा अगर मैं वह दोहरा दूँ तो मुझे गिरफ्तार कर लिया जाएगा'। स्पष्टतः ऐसा कथन उन युवाओं को विचलित करने के लिए काफी है जो भगवान राम और कृष्ण को अपने हृदय मंदिर में स्थान दिए हुए हैं साथ ही महर्षि दयानन्द को एक युगपुरुष के रूप में देखते हैं। आशुतोष की मक्कारी यह रही कि उन्होंने एक भी ऐसा प्रमाण नहीं दिया जिससे यह प्रमाणित हो सके कि महर्षि दयानन्द ने कभी कहीं भी श्री राम के विरुद्ध कभी कुछ कहा अथवा लिखा हो। उन्हें हमारी ओर से चुनौती है कि अगर ऐसा कोई प्रसंग हो तो वे दिखावें और नहीं दिखा सकें तो सार्वजनिक रूप से माफी मागने में उन्हें संकोच नहीं करना चाहिए। हमारा तो यहाँ तक कहना है कि आर्यसमाज जिस वैदिक संस्कृति के भवन का निर्माण करना चाहता है उसकी छत राम और कृष्ण नामक दो स्तंभों पर खडी है। हमारा कथन है कि वेदों की शिक्षाओं को यदि मूर्त रूप में देखना चाहते हो राम और कृष्ण के जीवन को देखो। आर्यसमाज का मानना है कि जितने भी उदात्त नैतिक मानवीय मूल्यों की परिकल्पना की जा सकती है वे सब श्री राम और योगिराज कृष्ण के जीवन में उपस्थित हैं। आशुतोष जी तनिक उक्त दोनों महात्माओं के जीवन पर आर्यसमाज के विद्वानों द्वारा लिखित साहित्य को पढ़ तो लीजिये। आपने प्रमाण नहीं दिए परन्तु हम बताते हैं कि महर्षि दयानन्द श्री कृष्ण महाराज के बारे क्या लिखते हैं

देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उन का गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिस में कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा -सत्यार्थ प्रकाश 11 समुल्लास

श्री कृष्ण जी महाराज के बारे में यह जो स्पष्ट कथन महर्षि दयानन्द का है, आशुतोष जी आपने उसे दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत न कर उन्हें विपरीत संकेत क्यों दिए क्या यह आप बताने का कष्ट करेंगे? क्या आपने अपनी पत्रकारिता से न्याय किया है?

आगे भी इसी समुल्लास में सोमनाथ के मंदिर की मूर्ति के भंजन पर टिप्पणी करते हुए दयानन्द पुनः भगवान् कृष्ण की शूरवीरता का स्मरण करते हुए लिखते है- जो श्रीकृष्ण के सदृश कोई होता तो इनके धुर्रे

उड़ा देता और ये भागते फिरते। -सत्यार्थ प्रकाश 11 समुल्लास

आशुतोष चाहे न समझे पर पाठक आसानी से समझ सकते हैं कि महर्षि दयानन्द की दृष्टि में श्री कृष्ण महाराज का कितना ऊँचा स्थान था।

मैं भगवान राम के बारे में भी दो पंक्ति लिख दूँ- श्री राम का जीवन चरित्र ही बाल्मीकि रामायण है। दयानन्द चाहते हैं कि प्रत्येक बालक-बालिका श्री राम के जीवन को पढ़े इसीलिए जब वे अपने पाठ्यक्रम का निर्माण करते हैं तो उसमें बाल्मीकि रामायण को सम्मिलित करते हैं। देखें- 'तत्पश्चात् मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण और महाभारत के उद्योगपर्वान्तर्गत विदुरनीति आदि अच्छे-अच्छे प्रकरण जिनसे दुष्ट व्यसन दूर हों और उत्तमता सभ्यता प्राप्त हो वैसे को काव्यरीति से अर्थात् पदच्छेद, पदार्थोक्ति, अन्वय, विशेष्य विशेषण और भावार्थ को अध्यापक लोग जनावें और विद्यार्थी लोग जानते जायें'-सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास।

भगवान् राम के प्रति हीन भावना रखने वाला कोई आचार्य क्या उनके जीवन चरित्र को स्वनिर्धारित पाठ्यक्रम में रखेगा? और उसे उत्तमता और सभ्यता प्राप्त करने का साधन मानेगा? आशुतोष जी आपने उक्त प्रकरण दर्शकों को क्यों नहीं बताया? कोई उत्तर देंगे?

अन्त में यही कहेंगे कि आशुतोष जी में तनिक भी नैतिकता शेष हो तो अपने असत्यवादन की गम्भीरता व अनैतिकता को समझते हुए सार्वजनिक क्षमा-याचना करेंगे।

पद्मभूषण, कर्मयोगी, भामाशाह

२७ मार्च

महाशय धर्मपाल जी

के जन्मदिवस के अवसर पर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को स्मरण करते हुए हम सभी उनके बताये मार्ग पर चलने के लिए संकल्पित होते हैं और परमपिता परमात्मा से सहाय हेतु प्रार्थना करते हैं।

– अशोक आर्य एवं समस्त न्यासीगण

पद्मभूषण, कर्मयोगी
महाशय धर्मपाल
स्मर्तिशेष

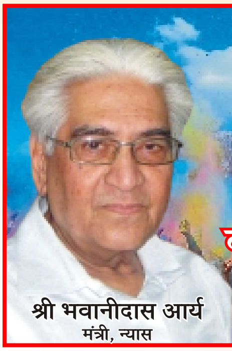

होलिकोत्सव के पावन पर्व पर न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

श्री भवानीदास आर्य
मंत्री, न्यास

पूरा नाम–
चलभाष–

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०२/२१

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या–

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए।(नवम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ सा		क्य	■	२	ने		■	३	हीं
४ पु			प	■	५	क		■	■
६	धा		ण			ष्य	■	७	त्यु

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. कुछ लोग मानते हैं कि मुक्ति में जीवात्मा परमात्मा के लोक विशेष में निवास करता है, उसे किस प्रकार की मुक्ति के नाम से कहा गया है?
२. जन्म एक है या अनेक ?
३. क्या जीव त्रिकालदर्शी है?
४. जीवात्मा को सुख दुःख किस आधार पर मिलते है?
५. मनुष्य और अन्य पश्वादि के शरीर में जीव एक से है वा भिन्न-भिन्न जाति के ?
७. जब पाप पुण्य बराबर होता है तब कैसा जन्म मिलता है?
८. जब जीव शरीर से निकलता है तो शरीर का क्या होता है?

''विस्तृत नियम पृष्ठ २४ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मई २०२१

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वि-जन्मशताब्दी लेखमाला

(फरवरी 2024 तक प्रतिमाह एक लेख)

पिता-पुत्र का अंतिम मिलन

ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य कोट कांगड़ा में तीन मास रहे, परन्तु उनकी मनोरथ मुक्ता उन्हें वहां न मिली। यहाँ रहते हुए उन्होंने सिद्धपुर में कार्तिक मास में होने वाले मेले में, अनेकों योगी, महात्मा व संन्यासियों के पधारने की बात सुनी। अभीष्ट सिद्धि की आशा में वे सिद्धपुर चले गए। सिद्धपुर पहुँच शुद्ध चैतन्य जी ने नीलकंठ महादेव के मंदिर में आसन जमाया और सच्चे अध्यात्मवेत्ताओं की खोज में लग गए।

उधर पूर्व परिचित एक वैरागी जिससे शुद्ध चैतन्य मिले थे, ने टंकारा पहुँच कर पिता को बता दिया कि मूलशंकर सिद्धपुर मेले में मिल सकता है। पिता सिपाहियों सहित सिद्धपुर मेले में जा पहुंचे व काषाय वस्त्रधारी अपने पुत्र की दशा देख उनकी क्रोधाग्नि भड़क उठी। उन्होंने पुत्र को काफी भला-बुरा कहा और उसके काषाय वस्त्र फाड़ दिए। परिस्थिति को देखते हुए शुद्ध चैतन्य जी ने पिता से क्षमा मांग ली व वापस घर चलने की सहमति दे दी।

देवीर्द्वार इन्द्रं संघाते वीड्वीर्यामन्नवर्धयन्। आ वत्सेन तरुणेन कुमारेण च
मीवतापार्वाणं रेणुककाटं नुदन्तां वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज।। यजु. २८.१३

महर्षि दयानन्द सरस्वती इसका संस्कृत में भाष्य करते हुए बाल विवाह को जीवन की राह में उसी प्रकार की बाधा मानते हैं जैसे कि मुख्य मार्ग में कोई कुआं हो, जिसमें गिर जाने का भय सदा उपस्थित रहता है। वे लिखते हैं-

हे मनुष्याः! यथा पथिका मार्गे वर्तमानं कूपं निवार्य शुद्धं मार्गं कृत्वा प्राणिनः सुखेन गमयन्ति, तथा बाल्यावस्थायां विवाहादीन् विघ्नान् निवार्य विद्यां प्रापय्य स्वसन्तानान् सुखमार्गे गमयन्तु।

भाव यह है कि- हे मनुष्यों! जैसे पथिक जन मार्ग में स्थित कुए को टालकर और मार्ग को शुद्ध करके प्राणियों को सुखपूर्वक गमनागमन-युक्त करते हैं, वैसे आप लोग **'बचपन में विवाह' आदि विघ्नों को हटाकर और विद्या प्राप्त कराके अपने संतानों को सुख के मार्ग में चलावें।**

इस प्रकार यह नितांत स्पष्ट है कि वैदिक संस्कृति में बाल-विवाह का कोई स्थान नहीं है क्योंकि वैदिकों के निकट वेद से बढ़कर कोई दूसरा प्रमाण नहीं है।

यहाँ यह भी लिख दें कि भारत का दुर्भाग्य रहा कि विदेशी शासन काल में जब अशिक्षा का बोलबाला हुआ और वैदिक शिक्षाएं जन सामान्य के बीच में से विलुप्त हो गयीं तब चंद स्वार्थी लोगों ने अपने मतानुसार कुछ भी विधान बनाकर वेदादि शास्त्रों के नाम से प्रचलित कर दिया। ऐसा प्रयास बाल-विवाह को भी शास्त्रसम्मत बताने हेतु किया गया। महर्षि दयानन्द ने एक रोचक प्रकार से सत्यार्थ प्रकाश में इस धारणा का खंडन किया। पाठक उसका भी आनंद लें-

पाराशरी और शीघ्रबोध में उपस्थित बताते हुए निम्न श्लोकों से स्वार्थियों द्वारा बाल-विवाह का समर्थन किया गया-

अष्टवर्षा भवेद् गौरी, नव वर्षा च रोहिणी। दशवर्षा भवेद् कन्या, तत ऊर्ध्वं रजस्वला।।
माता चैव पिता तस्या ज्येष्ठो भ्राता तथैव च यस्ते नरकं यान्ति दृष्ट्वाकन्यां रजस्वलां।।

अर्थात् कन्या की आठवें वर्ष गौरी, नववें वर्ष रोहिणी, दशवें वर्ष कन्या और उसके आगे रजस्वला संज्ञा हो जाती है। दशवें वर्ष तक विवाह न करके रजस्वला कन्या को माता, पिता और उसका बड़ा भाई ये तीनों देखके नरक में गिरते हैं।

इसके प्रत्युत्तर में महर्षि दयानन्द ऐसे श्लोकों का जिनका कि निर्माण स्वार्थी लोगों द्वारा वेद-विरुद्ध कर दिया जाता है, इसे दर्शाने हेतु ब्रह्मपुराण का नाम लेकर स्वयं निर्मित एक श्लोक बनाकर मनोरंजक तरीके से प्रस्तुत करते हैं-

एक क्षणा भवेद् गौरी, द्वि क्षणेयन्तु रोहिणी। त्रिक्षणा सा भवेत्कन्या ह्यत ऊर्ध्वं रजस्वला।।

माता पिता तथा भ्राता मातुलो भगिनी स्वका। सर्वे ते नरकं यान्ति द्रष्ट्वा कन्यां रजस्वलां।।

अर्थात् जितने समय में परमाणु एक पलटा खावे उतने समय को क्षण कहते हैं। जब कन्या जन्मे तब एक क्षण में गौरी, दूसरे में रोहिणी, तीसरे में कन्या और चौथे में रजस्वला हो जाती है। उस रजस्वला को देखके उसके माता, पिता, भाई,मामा और बहिन सब नरक को जाते हैं। यहाँ लिखे गए प्रश्नोत्तर भी

पठनीय हैं अतः उन्हें भी उद्धृत कर रहे हैं-
(प्रश्न) ये श्लोक प्रमाण नहीं हैं (अर्थात् जिन्होंने अष्टवर्षा वाले श्लोक प्रमाण स्वरूप दिए थे वे कहते हैं कि दयानन्द द्वारा प्रस्तुत श्लोक प्रमाण नहीं हैं) (उत्तर) क्यों प्रमाण नहीं, जो ब्रह्मा के श्लोक प्रमाण नहीं तो तुम्हारे भी प्रमाण नहीं हो सकते। (प्रश्न) वाह-वाह, पराशर और काशीनाथ का भी प्रमाण नहीं करते? (उत्तर) वाह जी वाह! क्या तुम ब्रह्मा जी का प्रमाण नही करते, पराशर, काशीनाथ से ब्रह्मा जी बड़े नहीं हैं? जो तुम ब्रह्मा जी के श्लोकों को नहीं मानते तो हम भी पराशर काशीनाथ के श्लोकों को नहीं मानते। (प्रश्न) तुम्हारे श्लोक असंभव होने से प्रमाण नहीं, क्योंकि सहस्रों क्षण जन्म समय ही में बीत जाते हैं तो विवाह कैसे हो सकता है?और उस समय विवाह करने का कुछ फल भी नहीं दीखता। (उत्तर) जो हमारे श्लोक असंभव हैं, तुम्हारे भी असंभव हैं, क्योंकि आठ, नौ और दशवें वर्ष विवाह करना भी निष्फल है। क्योंकि सोलहवें वर्ष के पश्चात् चौबीसवें वर्ष पर्यंत विवाह होने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बलयुक्त होने से संतान उत्तम होते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ऋषि दयानन्द हर प्रकार का तर्क देकर बाल-विवाह का घोर विरोध करते हैं।

नारी जाति के प्रति स्वामी दयानन्द के कार्य का मूल्यांकन करते हुए 'बिरादरे हिन्द' नामक पत्र ने अपने १ जुलाई १८७७ के अंक में लिखा था- **'यह पुरुष संसार में केवल धार्मिक सुधार का ही इच्छुक नहीं है वरन जाति की बाल विवाह आदि सब बुराइयों के सुधार पर भी उनकी दृष्टि है। स्त्रियों की शिक्षा और स्वतंत्रता का वह विशेष रूप से इच्छुक है। उनकी सम्मति है कि जब तक स्त्रियों में शिक्षा का प्रसार नहीं होगा और उन्हें जनाने के बंदीगृह से मुक्ति नहीं मिलेगी, तब तक इस देश में किसी उल्लेखनीय उन्नति की आशा करना व्यर्थ है** (आर्यसमाज का इतिहास भाग १)।

यह बात नितांत सत्य है कि प्राचीन भारत में बाल-विवाह का प्रचलन नहीं मिलता। 'आर्यसमाज के इतिहास' में लिखा है कि- 'यवन, शक, कुषाण, हूण आदि विदेशी व विधर्मी जातियों के आक्रमणों के समय भारत में स्त्रियों की दशा में हीनता आनी आरम्भ हुयी... इसी समय में भारत में बाल-विवाह की प्रथा का प्रारम्भ हुआ, और साथ में परदा प्रथा का। तुर्क-अफगान युग में बाल-विवाह और परदा प्रथा में और भी अधिक वृद्धि हुयी और उद्दण्ड मुस्लिम सैनिकों तथा राज कर्मचारियों के भय से हिन्दू लोग बचपन में ही अपनी बालिकाओं का विवाह करने लगे ताकि माता-पिता शीघ्र ही कन्यादान का पुण्य प्राप्त कर निश्चिन्त हो जायें।'

देखा जाय तो इन्ही दुष्टों के भय से बालिकाओं को परदे में

रखा जाने लगा, उनके बाहर निकलने को हतोत्साहित किया जाने लगा तथा उनका विद्यालय जाना बंद किया गया और नारी का स्वाभाविक विकास घर की चार-दीवारी के मध्य घुट कर रह गया।

ऐतिहासिक कारण जो भी रहे हों, महर्षि नारी को इस हीन दशा से निकालकर उसे प्राचीन गौरवशाली स्थान प्रदान करना चाहते थे। उसमें बाल-विवाह सर्वाधिक बाधक था। इसीलिए **आज से लगभग १५० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द बाल विवाह रोकने हेतु शासक को कानून बनाने का अभिमत प्रदान करते हैं।** जिसके अनुसरण में आर्यसमाज द्वारा गंभीर प्रयास किये गए। जिसकी चर्चा आगे की कड़ियों में करने का प्रयास करेंगे। परन्तु यह तय है कि कानूनों के बाबजूद बाल विवाह से उन्मुक्ति नहीं मिल पायी है जो चिन्त्य है। अभी हाल ही में आई यूनिसेफ की एक रिपोर्ट में यह खुलासा किया गया है- रिपोर्ट के अनुसार देश में ४७ फीसदी बालिकाओं की शादी १८ वर्ष से कम उम्र में कर दी जाती है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि २२ फीसदी बालिकाएं १८ वर्ष से पहले ही माँ बन जाती हैं। एक बात और कि यह केवल भारत की समस्या नहीं यह विश्वव्यापी समस्या है जो नारी जाति की उन्नति में घातक रूप से बाधा पैदा कर रही है। बिडम्बना यह है कि भारत में आर्य (हिन्दू) धर्म में तो समय-समय पर सुधारकों ने बाल विवाह के विरुद्ध बिगुल बजाया है, परन्तु अनेक मत-मतान्तरों जैसे इस्लाम में तो इस पर विचार करना भी धर्म के प्रतिकूल माना जाता है, क्योंकि उस मत में नबी अर्थात् स्वयं पैगम्बर साहब ने ६ वर्ष की बच्ची से विवाह किया था। प्रमाणस्वरूप निम्न हदीस प्रस्तुत है-

"The Prophet wrote the (marriage contract) with Aisha while she was six years old and consummated his marriage with her while she was nine years old and she remained with him for nine years (i.e. till his death)." -Sahih al-Bukhari Book 7: 62, 88

यह सही है कि वर्त्तमान समय के अनुसार अनेक इस्लामिक

राज्य भी ऐसे विवाह अनुबंधों को अमान्य करार देते हैं परन्तु शरिया अदालतें ऐसी राज्य विधियों को निरस्त करने में सक्षम हैं। बहुत से इस्लामी राज्यों में ६ वर्ष की बालिका को विवाह के क्रम में बालिका नहीं माना जाता, कारण पैगम्बर साहब ने ६ वर्षीय आयशा के साथ जब वे ६ वर्ष की थीं विवाह किया तथा जब वे ६ वर्ष की थीं विवाह को consumate किया। स्वयं कुरआन ३३.२० में कहा है - 'निश्चय ही तुम लोगों के अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श था.....' स्पष्ट है कि प्रत्येक अनुगामी से लिए उनका अनुसरण करने की अपेक्षा की गयी है। शायद इसीलिए अरब के बूढ़े शेख भारत आकर अल्पवयस बालिकाओं की मजबूरी का लाभ उठाकर उनसे मुता विवाह करते हैं।

उत्तर पश्चिम नाइजीरिया के केट्सीना राज्य की विधान सभा ने बच्चियों की सुरक्षा के लिए एक कानून बनाया, जिसमें १८ वर्ष तक की आयु को बचपन माना है परन्तु उसमें प्रावधित कर दिया कि विवाह की आयु पर यह लागू नहीं होगा। यहाँ ८० प्रतिशत से अधिक लड़कियों का विवाह १८ वर्ष से कम की आयु में हो जाता है और अक्सर १० वर्ष से कम की बच्चियों का विवाह कर दिया जाता है। इससे इस्लामिक मानसिकता का पता चलता है।

ईरान में कानून है (Article 1041) लड़कियों का विवाह ६ वर्ष की अवस्था में किया जा सकता है। यह पैगम्बर के आचरण के अनुक्रम में है जिसे इस्लाम में आवश्यक माना गया है। अयातुल्लाह खुमैनी ने स्वयं ने १० वर्ष की लड़की से विवाह किया जब वह स्वयं २८ वर्ष का था। खुमैनी का कहना था कि किसी पिता को अपनी बेटी की माहवारी अपने घर में नहीं देखना चाहिए।

२०११ में बंगलादेश के मुफ्ती फजूल हक अमीनी का कथन दृष्टव्य है-

"Banning child marriage will cause challenging the marriage of the holy prophet of Islam, [putting] the moral character of the prophet into controversy and challenge." He added a threat: "Islam permits child marriage and it will not be tolerated if any ruler will ever try to touch this issue in the name of giving more rights to women."

यह मनःस्थिति अत्यंत घातक है। नारी जाति के विकास में सर्वाधिक बाधक तत्व बाल-विवाह है, जैसा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद के आधार पर अनेकों जगह कहा है और आर्यसमाज ने इसीलिए अत्यंत सराहनीय कार्य किया।

शारदा एक्ट-

अगर हम इतिहास की बात करें तो इतिहास की सहस्रों घटनाओं में से १८६० में घटित एक हृदय विदारक घटना का उल्लेख करदें तो अनुचित न होगा। १० वर्ष की फूलमणि की शादी ३० साल से भी ज्यादा उम्र के हरिमोहन मैती से कर दी गई थी। हरिमोहन ने उसका बलात्कार किया, इस वजह से फूलमणि की मौत हो गई। लेकिन हरिमोहन मैती पर रेप के चार्जेज नहीं लगे। क्यों? क्योंकि फूलमणि उसकी पत्नी थी और कम आयु की पत्नी के साथ संबंध बनाना तत्समय में बलात्कार नहीं था। यही नहीं, तब विवाह के लिए कोई न्यूनतम उम्र निर्धारित नहीं थी। इसके बाद १८९१ में 'एज आफ कंसेंट एक्ट' बनाया गया जिसमें शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिए लड़कियों की सहमति की उम्र को १२ वर्ष कर दिया गया था।

जैसा कि हमने देखा आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द बाल विवाह के प्रबल विरोधी थे। भारत में बाल-विवाहों को लेकर वे कितने चिंतित थे, आप इसी से अंदाज लगाइए कि पंडित लेखराम अजमेर जाकर केवल एक बार महर्षि दयानन्द से मिले, उस एक मुलाकात में भी ऋषि ने उन्हें २५ वर्ष से पूर्व विवाह न करने का उपदेश किया। अतः स्वाभाविक था कि आर्यसमाज बाल विवाह निषेध को अपने कार्यक्रमों के केंद्र में रखता और उसने ऐसा ही किया। आर्यसमाज के नेता राय

बहादुर हर बिलास शारदा ने इस विषयक कानून बनवाने हेतु भरसक प्रयास किया। १९२७ में, राय साहिब हरबिलास शारदा ने केंद्रीय विधान सभा में अपना हिंदू बाल विवाह विधेयक पेश किया। परम्परावादी लोगों ने इसका विरोध किया, यहाँ तक कि तिलक की सम्मति भी इसके विरोध में थी। विरोध के चलते सरकार ने विधेयक को एक विशिष्ट समिति को सौंप दिया। इसकी अध्यक्षता केंद्रीय प्रांतों के गृह सदस्य सर मोरोपंत विश्वनाथ जोशी ने की। समिति के अन्य सदस्य अर्कोट रामासामी मुदलियार, खान बहादुर माथुक, मियां इमाम बक्श कडू, श्रीमती ओ, बरीदी बीदोन, रामेश्वरी नेहरू, सत्येंद्र चंद्र मित्र, ठाकुर दास भार्गव, मौलवी मुहम्मद याकूब, मियां सर मुहम्मद शाह नवाज और एमडी साग थे।

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन, महिला भारतीय संघ और भारत में महिलाओं की राष्ट्रीय परिषद्, ने अपने सदस्यों के माध्यम से जोशी समिति के समक्ष शादी और सहमति के लिए उम्र बढ़ाने के पक्ष में तर्क दिए। मुस्लिम महिलाओं ने मुस्लिम उलेमाओं के विरोध के बावजूद शादी की उम्र सीमा बढ़ाने के पक्ष में जोशी समिति को अपने विचार प्रस्तुत किए।

जोशी समिति ने २० जून १९२९ को अपनी रिपोर्ट पेश की और इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल द्वारा २८ सितंबर १९२९ को पारित किया गया और १ अप्रैल १९३० को पूरे ब्रिटिश भारत में कानून बन गया। इसने १४ और १८ को सभी समुदायों के क्रमशः लड़कियों और लड़कों के लिए विवाह योग्य उम्र के रूप में तय किया। आज अगर हम यह सोचें कि बाल-विवाह का जमाना गया तो भयंकर भूल होगी। आज भी लाखों विवाह छोटी आयु में हो रहे हैं, जबकि सरकार लड़कियों के लिए भी २१ वर्ष का प्रावधान करने की सोच रही है। स्पष्ट है कि केवल कानून से काम नहीं चलेगा इस हेतु सामजिक जागरूकता उत्पन्न करना आवश्यक है जिसमें आर्यसमाज के साथ कंधे से कंधा लगाकर सभी को सामने आना पड़ेगा।

क्रमशः

- अशोक आर्य

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें

''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

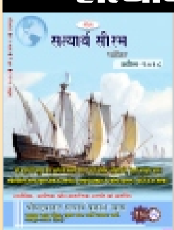

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ 24 पर देखें।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य
मंत्री-न्यास

भंवरलाल गर्ग
कार्यालय मंत्री

डॉ.अमृत लाल तापड़िया
उपमंत्री-न्यास

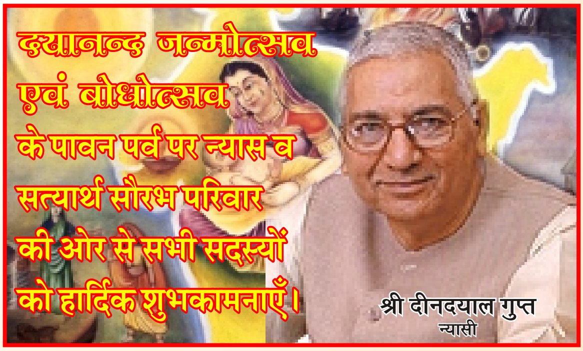

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु
डॉ. कृष्णलाल डंग, पावंटा साहिब
ने संरक्षक सदस्यता (रु. 11000) ग्रहण की है, अनेकशः धन्यवाद।
– डॉ. अमृतलाल तापडिया, संयुक्त मंत्री, न्यास

बसन्त पंचमी पर्व सम्पन्न

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर में बसन्त पंचमी के अवसर पर विशेष यज्ञ, भजन, कविता पाठ एवं पर्व के महत्व पर आयोजन रखा गया। इस अवसर पर आर्य समाज के गणमान्य सदस्यों के अतिरिक्त दयानन्द कन्या विद्यालय की अध्यापिकाएं एवं बालिकाओं ने कार्यक्रम में भाग लिया।

परोपकारिणी सभा की स्थापना

ऋषि दयानन्द का अगला प्रमुख स्तम्भ मील का पत्थर था- परोपकारिणी सभा की स्थापना और इसका भी घर था महाराणा का उदयपुर। अर्थात् उदयपुर में स्थित नवलखा महल। वस्तुतः परोपकारिणी सभा की प्रथम स्थापना महर्षि दयानन्द ने मेरठ, संयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तरप्रदेश) में की जिसका स्वीकार पत्र १६ अगस्त सन् १८८० में मेरठ में ही लिखा गया और उसी दिन मेरठ के सब रजिस्ट्रार कार्यालय में उसका पंजीकरण करवा लिया गया। मेरठ में स्थापित प्रथम परोपकारिणी सभा के प्रधान लाला मूलराज (लाहौर) और मंत्री लाला रामशरण दास जो उस समय मेरठ आर्य समाज के उप प्रधान थे, नियुक्त किए गए। सभा के सभासदों की संख्या १८ थी। स्वीकार पत्र (वसीयतनामे) के अनुसार स्वामीजी ने अपने वस्त्र, धन, पुस्तकें तथा वैदिक यंत्रालय (जो उस समय प्रयाग में स्थित था) आदि का स्वामित्व सभा को प्रदान कर दिया। वस्तुतः ऋषि दयानन्द को अपनी उत्तराधिकारिणी सभा का विचार उदयपुर में ही उत्पन्न हुआ था। अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के निर्माण का स्वप्न ऋषि ने मेवाड़ के महाराणाओं की जन्मभूमि चित्तौड़ में बहुत पहले ही देखना प्रारम्भ कर दिया था। किन्तु १६ अगस्त १८८० में परोपकारिणी सभा की प्रथम स्थापना ऋषि ने शीघ्र इसलिए कर दी कि उनकी सम्पत्ति अनेक पुस्तकें आदि इधर उधर बिखरी पड़ी थीं, वैदिक यंत्रालय, जिसके प्रबन्धकर्ता उनके विश्वासपात्र भक्त मुंशी समर्थदान थे, प्रयाग में थे, उनके द्वारा स्थापित की गई अनेक आर्य समाजें देशभर में भिन्न भिन्न अनेक स्थानों पर चल रही थीं जिनकी व्यवस्था और प्रबन्ध करनेवाली कोई केन्द्रीय भूत एक संस्था नहीं थी। वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करने वाले विद्वान् उपदेशकों को तैयार करने वाली भी कोई संस्था नहीं थी। परोपकारिणी सभा उनकी उत्तराधिकारिणी संस्था बनकर उनकी धनादि सम्पत्ति को संभाल सकती थी, प्रयाग में स्थित वैदिक यंत्रालय को भी संभाल सकती थी, अनेक स्थानों पर बिखरी हुई आर्य समाजों की भी व्यवस्था कर सकती थी और वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार करने वाले विद्वान् उपदेशक भी तैयार कर सकती थी जिसका प्रथम उद्देश्य ही उन्होंने वेद आदि शास्त्रों के विद्वानों द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करना रखा। पुनश्च सभा को संभालने के लिए उनका परम विश्वासपात्र और अत्यन्त मेधावी योग्य तथा सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त शिष्य राय मूलराज एम.ए. था (जो लाहौर वर्तमान पाकिस्तान)में अतिरिक्त

असिस्टेन्ट कमिश्नर होते हुए आर्य समाज की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से पंजाब में कार्य कर रहा था। अतः शुभमृशीघ्रम् की नीति को ध्यान में रखते हुए ऋषि ने परोपकारिणी सभा की प्रथम स्थापना सन् १८८० ईस्वी में ही कर दी, जिसका प्रधान ऋषि ने उपर्युक्त राय मूलराज एम.ए. को ही नियुक्त किया। सभा की स्थापना और रजिस्ट्री भी करने के लिए मेरठ संयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तरप्रदेश) को इसलिए चुना कि सन् १८५७ में देश के स्वतंत्रता संग्राम की चिन्गारी का जन्मदाता प्रथम स्थान मेरठ था। अतः वह राष्ट्रीय भावनाओं का समूचे देश का केन्द्र बन गया और उसका नाम विदेशों तक इतिहास में प्रखर रूप से ख्याति प्राप्त कर चुका था।

अतः ऋषि ने अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा की प्रथम स्थापना मेरठ में की जिसका प्रधान लाहौर वाले राय मूलराज एम.ए. को नियुक्त किया और मंत्री बनाया स्थानीय निवासी लाला रामशरण दास को जो उस समय मेरठ की आर्य समाज के उपप्रधान थे।

कालान्तर में ऋषि दयानन्द को परोपकारिणी सभा की द्वितीय बार स्थापना करने की आवश्यकता अनुभव हुई। इसका एक कारण तो यह था कि कालान्तर में उनका परमभक्त, विश्वासपात्र, वैदिक धर्म में अटूट श्रद्धा रखने वाला, देश की रक्षा के लिए मुगल साम्राज्य से अपने प्राणप्रण से लोहा लेने वाले, एकमात्र महाराणा प्रताप सिंह की मेवाड़ की जन्मभूमि का वंशज आर्य जाति का नरेश उदयपुर का महाराणा सज्जन सिंह उनके शिष्य के रूप में तैयार हो चुका था जिसके अंतर्गत अनेक माण्डलिक सामन्त धर्मप्रेमी राजा भी थे। दूसरे प्रथम परोपकारिणी सभा के प्रधान राय मूलराज एम.ए. की निष्ठा वैदिक सिद्धान्तों और ऋषि के मन्तव्यों में इतनी गहरी नहीं थी तथा सभा के सभासद मुंशी इन्द्रमणि (मुरादाबाद) और कर्नल अल्काट एवं मैडम ब्लावट्स्की के साथ ऋषि का सैद्धान्तिक मतभेद उजागर हो चुका था। **अतः ऋषि दयानन्द ने उदयपुर में नवलखा महल में रहते हुए २७ फरवरी सन् १८८३ (फाल्गुन कृष्णा पंचमी विक्रम संवत १६३६) के दिन परोपकारिणी सभा की पुनः स्थापना की।** सभा का प्रधान नियुक्त किया मेवाड़ नरेश महाराणा सज्जन सिंह(सभापति), उपप्रधान लाला मूलराज एम.ए., प्रधान आर्य समाज लाहौर (उपसभापति), मंत्री श्रीयुत् कविराज श्यामलदास जी उदयपुर राज्य,मेवाड़, मंत्री लाला रामशरण दास रईस, उपप्रधान आर्य समाज मेरठ, उपमंत्री पण्ड्या मोहन लाल विष्णुलाल उदयपुर, इन पांच अधिकारियों के अतिरिक्त १८ सभासद नियुक्त किए गए जिनमें स्वीकार पत्र के अनुसार प्रथम नाम श्रीमन् महाराजाधिराज श्री नाहरसिंह जी वर्मा, शाहपुरा का है। सभा का द्वितीय स्वीकार पत्र लिखा गया। स्वीकार पत्र के अनुसार ऋषि का धन, वस्त्र, पुस्तकें, प्रयाग स्थित वैदिक यंत्रालय आदि सम्पत्ति उत्तराधिकार के रूप में सभा को सौंप दी गईं। सभा की स्थापना तो उदयपुर में हुई ही, रजिस्ट्री भी उसी स्थापना के दिन अर्थात् २७ फरवरी १८८३ (फाल्गुन कृष्णा पंचमी विक्रम संवत १६३६) उदयपुर राज्य की सर्वोच्च प्रशासिका महद् राजसभा के द्वारा करवायी गई। परोपकारिणी सभा के तीन उद्देश्य रखे गए? वेद और वेदांगादि शास्त्रों का प्रचार अर्थात् उनकी व्याख्या करने, कराने पढ़ने पढ़ाने सुनने सुनाने, छापने छपवाने का कार्य।

२.वेदोक्त धर्म के उपदेश और शिक्षा अर्थात् उपदेशक मंडली नियत करके देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में भेजकर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग कराना।

३.आर्यावर्तीय और दीन मनुष्यों के संरक्षण, पोषण और सुशिक्षा का कार्य करना।

इस प्रकार परोपकारिणी सभा की द्वितीय बार स्थापना था ऋषि दयानन्द का अंतिम प्रमुख स्तम्भ, मील का पत्थर, जिसका गढ़ था महाराणा का उदयपुर।

२७ फरवरी सन् १८८३ में परोपकारिणी सभा की द्वितीय और अंतिम बार स्थापना के बाद ऋषि दयानन्द उदयपुर से वैदिक धर्म के प्रचार के लिए निकल पड़े और ३१ मई १८८३ ई. के दिन जोधपुर पहुंचे। वहां महाराजा जोधपुर के आतिथ्य भवन में रहते हुए २७ सितम्बर १८८३ तक धर्म प्रचार करते रहे। किन्तु देव दुर्विपाक से वे राजमहल के वैश्या,पाखण्डी ब्राह्मणों और वेद विरोधी कुरानियों के हलाहल विष का शिकार बन गए जो उन्हें दूध में मिलाकर पिलाया गया। चिकित्सा के लिए उन्हें आबू पर्वत लाया गया और वहां से उन्हें अजमेर में स्थित भिनाय की कोठी में स्थानान्तरित कर दिया गया।

३० अक्टूबर सन् १८८३ को ही ऋषि का निर्वाण (निधन) भिनाय की कोठी अजमेर में हो गया और अगले दिन ३१ अक्टूबर १८८३ ईस्वी को स्वामी जी के शरीर की अन्त्येष्टि, दाह संस्कार, अजमेर की ही मलूसर श्मशान भूमि में कर दिया गया। इस प्रकार अजमेर में ऋषि की स्मृति बनाये रखने के लिए परोपकारिणी सभा का प्रथम अधिवेशन सभा के प्रधान (सभापति) महाराणा सज्जनसिंह जी की अध्यक्षता में २८-२६ दिसम्बर १८८३ में अजमेर में ही सम्पन्न हुआ। यद्यपि शारीरिक अवस्था के कारण महाराणा उसमें उपस्थित नहीं हो सके। इसके एक वर्ष बाद ही २६ दिसम्बर सन् १८८४ (पोषशुक्ला ६ विक्रम संवत् १६४१) के दिन महाराणा

सज्जन सिंह परोपकारिणी सभा के प्रधान सभापति का भी निधन हो गया। परोपकारिणी सभा का कार्यालय स्थायी रूप से ऋषि की स्मृति में अजमेर में स्थानान्तरित कर दिया। वसीयतनामे के अनुसार ऋषि के वस्त्र, धन सम्पत्ति आदि सामग्री सभा के कार्यालय अजमेर में रख दिए गए, प्रयाग स्थित वैदिक यंत्रालय भी अजमेर में सभा के कार्यालय में आ गया।

ऋषि के परम भक्त वैदिक धर्मानुयायी शाहपुराधीश राजाधिराज श्री नाहर सिंह बर्म्मा जो परोपकारिणी सभा के ऋषि द्वारा नियुक्त प्रथम सभासद (कार्यकाल सन् १८८३ से १९३३) थे, जो सभा के प्रथम प्रधान सभापति महाराणा सज्जनसिंह जी के निधन के बाद सभा के छठे अधिवेशन में सभा के प्रधान सभापति पद पर प्रतिष्ठित भी किए गए, ने स्वामी जी की स्मृति में अजमेर में आनासागर के किनारे पर स्थित अपना विशाल बाग भी दयानन्द आश्रम की स्थापना के लिए प्रदान किया जहां आज दयानन्द सरस्वती भवन, यज्ञशाला, गौशाला, अतिथिशाला, गुरुकुल शोध संस्थान, ऋषि उद्यान आदि के रूप में भव्य भवन खड़े हुए हैं और जहां प्रतिवर्ष दीपावली के उपलक्ष्य में दो तीन दिन ऋषि मेला लगता है जिसमें हजारों लाखों की संख्या में ऋषिभक्त श्रद्धालु ऋषि की स्मृति में श्रद्धा सुमन अर्पित करने पहुंचते हैं।

'महाराणा का उदयपुर'- आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के कालजयी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश(द्वितीय संस्करण) का संशोधन और विश्वविख्यात उनकी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा (द्वितीय बार) की स्थापना, ऋषि दयानन्द के इन दो मील के पत्थर प्रमुख स्तम्भों का गढ़ है जिनका केन्द्र है उदयपुर में स्थित नवलखा महल। महर्षि दयानन्द के इन दोनों मील के पत्थरों के गढ़ उदयपुर में उनकी स्मृति में स्तम्भ स्थापना करने का निर्णय १९८२ में सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत आयोजित सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह के अवसर पर लिया गया। निर्णय को क्रियान्वित करने के लिए १९९२ में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास बनाया गया जिसके कार्यालय के लिए उदयपुर स्थित नवलखा महल का अधिग्रहण किया गया। न्यास की स्वतंत्र रूप से स्थापना राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज और चौधरी हनुमान प्रसाद (स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती) के अनथक प्रयासों से १९९३ में हुई। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में प्रदर्शित सत्य के प्रकाश को विश्वभर में फैलाने के लिए 'सत्यार्थ सौरभ' नामक मासिक पत्रिका की स्थापना हुई जिसका अर्थ है सत्य अर्थों की सुगन्धि फैलाने वाली पत्रिका, जिसका प्रथम अंक जनवरी २०१२ में निकला और आज तक निरन्तर निर्बाध रूप से निकल रही है। अप्रैल २०२० में पत्रिका का १०० वां अंक होगा जो पत्रिका का शतांक विशेषांक होगा।

जैसे महाराणा प्रताप सिंह ने मुगल सम्राट अकबर से जीवनभर लोहा लेते हुए अपने बलिदान से मेवाड़ की भूमि को भारत की वीर शिरोमणि वन्दनीय बना दिया था। वैसे ही महर्षि दयानन्द ने भी अपने महान् कारनामों के गढ़ (महाराणा का उदयपुर) को समूचे आर्य जगत् का तीर्थ स्थल बना दिया। सत्यार्थ प्रकाश (द्वितीय संस्करण) की भूमिका के अंत में ये शब्द लिखकर इसे भी कालजयी अमर कर दिया। स्वामी दयानन्द के मिशन की जीवनयात्रा की अन्तिम मंजिल यह सज्जन निवास नवलखा महल है जो महाराणा के उदयपुर में विराजमान है। इसको निकालकर, त्यागकर, भुलाकर, उपेक्षित करके इसके बिना महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी आर्यों का आधा अधूरा क्या इतिहास रह जाता है? श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास महर्षि दयानन्द के इसी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक गौरव को बचाने और अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए भरसक प्रयासरत् है। अतः समस्त आर्यों का परम कर्तव्य है कि महाराणा के उदयपुर को अपना पुण्य तीर्थस्थल स्वीकार करें और महर्षि दयानन्द की पुण्य स्मृति में उसी नवलखा महल में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले कार्यक्रमों व मेलों में पधारकर तन-मन-धन से सहयोग करते हुए ऋषि के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए ऋषि ऋण चुकायें। इस प्रकार ऋषि के महाराणा के उदयपुर को अपना तीर्थ धाम बनायें, अजमेर की तरह उदयपुर में भी प्रतिवर्ष ऋषि मेले लगायें।

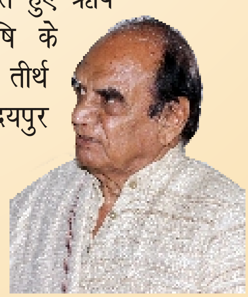

- वेद मार्तण्ड
डॉ.महावीर मीमांसक
उ-3/11, पश्चिम विहार, दिल्ली

क्या मुर्गीपालन की प्रक्रिया में अप्रत्यक्ष रूप से जो हिंसा तथा पीड़ा सन्निहित होती है, उससे आप वाकिफ हैं? यदि आप इस हिंसा से अनभिज्ञ हैं (यदि हिंसा को उचित मानते हैं या हिंसा होने या परपीड़ा करने को सर्वथा गलत न मानते हों, तो आगे उद्धृत तथ्य संभवतः आपके लिए नहीं हैं) या ज्ञान तो था किन्तु चेतना के स्तर तक नहीं पहुँच पाया, और सैद्धान्तिक रूप से आप हिंसा अथवा परपीड़ा को सर्वथा अनुचित समझते हैं, स्वयं को यह ज्ञान होने के पश्चात् कि आप या आपके कर्म; प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी प्रकार की जीव हिंसा या परपीड़ा का कारण हो सकते हैं, स्वयं को, इस कृत्य से पृथक् करना चाहते हैं, तो कुछ अन्य मार्मिक तथ्य आपके समक्ष उपस्थित हैं-

१. आमतौर पर व्यावसायिक स्तर पर अण्डे उत्पादित करने वाली प्रजातियाँ अलग, और मांस के रूप में काम में आने वाली प्रजातियाँ अलग होती हैं अतः अण्डे उत्पादित करने वाली प्रजातियों के मुर्गे, मुर्गीपालक के किसी लाभ के नहीं होते और उन्हें बड़ी ही निर्दयता के साथ Gas Chamber में या गर्दन तोड़कर या जीवित ही Blender में डालकर कत्ल कर दिया जाता है।

२. जीवन का आरम्भ ही मृत्यु की दुंदुभी बजाता हुआ आता है। जी हाँ, जहाँ मुर्गीपालकों द्वारा मुर्गियों की संख्या बढ़ाने के लिए जितना भी नियंत्रित प्रजनन किया जाता है उसमें से उत्पन्न हुये नर चूजों को केवल एक दिन की आयु में ही यांत्रिक कत्लखानों में मौत के घाट उतार दिया जाता है। चाहें तो यू ट्यूब पर उपलब्ध इन वीडीयोज में इस हृदय विदारक दृश्य का आप स्वयं साक्षात्कार कर सकते हैं। इतने प्यारे, मासूम, मूक पक्षियों की, अकाल, अकारण, निर्मम हत्या किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को झकझोर देने के लिए पर्याप्त है।

३. अब बात मादा चूजों की; भले ही जन्म लेते ही उसे काल के ग्रास में नहीं जाना पड़ता किन्तु यह अटल सत्य है कि उसी दिन उसका भी Death Sentence सुना दिया जाता है। एक अदृश्य Timer उसके गले में डाल दिया जाता है जो उसके जीवन की उल्टी गिनती प्रारम्भ कर चुका होता है, वो भी मानव के क्रूर हाथों द्वारा, न कि माँ प्रकृति द्वारा।

क्यों ? कैसे ?

आमतौर पर जब मुर्गी अण्डे देने लायक हो जाती है उसका प्रजनन काल लगभग २ से ३ वर्ष का होता है, और उसमें भी प्रथम वर्ष की तुलना में धीरे-धीरे उस की क्षमता घटती जाती है और जब उसके भरण-पोषण का व्यय उसके द्वारा दी जाने वाली उत्पादकता पर भारी पड़ने लगता है तो उस अदृश्य Timer की गिनती समाप्त हो जाती है और उसे भी उसी निर्ममता से यांत्रिक कत्लखानों में भेजकर कत्ल कर दिया जाता है। जबकि प्राकृतिक रूप से देखा जाए तो न्यून से न्यून ५ से ६ वर्ष का जीवन उसका अभी शेष था।

४. क्या कभी आपने Polutry Farms का दौरा किया है? यदि नहीं तो अवश्य कीजिए। साक्षात्कार कीजिए उन नारकीय परिस्थितियों का, जिनमें किसी भी जीवित प्राणी का कुछ क्षण भी बिताना मुश्किल है और वहाँ इन मुर्गियों को अपना पूरा जीवन काल गुजारने पर मजबूर किया जाता है। 'Battery Cage' नाम के इन पिंजरों में इन मूक जीवों को इस प्रकार से ठूंसा जाता है कि इन्हें कभी भी, पूरी तरह से अपने पंख खोलने तक का भी अवसर नहीं मिलता। पिंजरे में डालने से पूर्व इनकी चोंच और नाखून भी बिना किसी निश्चेतना (Anaesthesia) के तोड़ और उखाड़ दिए जाते हैं ताकि ये परस्पर या पालक से भी, किसी भी प्रकार का प्रतिकार ना कर पायें। मल-मूत्र का विसर्जन भी वहीं करने के कारण ये सदा गंदगी से सराबोर होकर ही अपना जीवन यापन करते हैं।

कितनी वेदना, कितनी पीड़ा, कितना भय, कितना अवसाद, कितना नैराश्य; क्या कुछ समाहित नहीं है इनके जीवन में।

क्या हम इस सब का हेतु नहीं हैं ?

तो चलिए इसी शृंखला में, इसी तथ्य के एक और पहलू पर विचार करते हैं। जिस वेदना, पीड़ा, भय, अवसाद और नैराश्य की भावना की बात हम कर रहे हैं क्या उस का प्रभाव इनके जीव में नही आएगा? आज के युग का कोई भी पढ़ा-लिखा व्यक्ति इस तथ्य से भली-भाँति परिचित होगा कि एक स्वस्थ, सुन्दर, निरोगी, सक्षम संतति की प्राप्ति हेतु प्रत्येक स्त्री और पुरुष को सदैव एक आनन्दमयी, तनावरहित, स्वास्थ्यवर्धक खाद्य-पेय पदार्थों से युक्त, वातावरण में रहने की चिकित्सकीय सलाह दी जाती है। क्यूँ? ताकि भावी संतति का बीज या यूँ कहें कि भावी माता या पिता की जो प्रजनन कोशिकायें हैं (Sperms & Ovum) वो जीवन से भरपूर और स्वस्थ हो सकें। और इस तथ्य की सत्यता का वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत करने की सम्भवतः किसी को भी आवश्यकता नहीं है।

तो क्या इसके बिल्कुल विपरीत परिस्थितियों से गुजर कर, अपने अवसाद, अपनी पीड़ा, अपने भय से सींचकर; जिस प्रजनन कोशिका को इन विवश प्राणियों ने जन्मा, उसका भक्षण कर, हम हमारे शरीर को कैसा स्वास्थ्य लाभ दे रहे हैं या हमारे शरीर के रस में, कण-कण में, कैसा भाव घोल रहे हैं, कदाचित् ये समझाने की आवश्यकता नहीं है।

हिंसाजनित भोजन कभी भी शान्तिदायक नही हो सकता।

आगे बढ़ने और अन्य दृष्टिकोणों पर चर्चा करने से पूर्व, जिन भावनात्मक या नैतिक मूल्यों की विवेचना हमने यहाँ की, उनमें एक अंतिम तथ्य और जोड़ना चाहूँगा। कुछ बन्धु इस तथ्य से सम्भवतः सहमति न रखें किन्तु मेरे निजी दृष्टिकोण में यदि मैं यह कहूँ तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि एक पूरा बाहर निकला अण्डा, और कुछ नहीं मुर्गी का Menstruation है और आप उस तक का भक्षण करना चाहते हैं तो यह सर्वथा आपका निजी फैसला है। (An egg is a product of an unfertilized reproductive cycle of a Hen, as a Menstruation is product of an unfertilized reproductive cycle of human female)

II. चलिये, अब चलते हैं एक दूसरे दृष्टिकोण की तरफ। कई महानुभाव ये कहते हुए पाये जाते हैं कि हम ये मानते हैं कि अण्डे को शुद्ध शाकाहार की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, हम ये भी मानते हैं कि अण्डे का सेवन शाकाहारी होने के नाते हमें आदर्श रूप से तो नहीं करना चाहिए परन्तु स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से केवल, हम इसका सेवन करते हैं या हमें इसके सेवन की सलाह दी गई है। क्यूँकि अण्डे से बढ़कर प्रोटीन और अन्य पोषक तत्व किसी शाकाहारी भोजन में नहीं हैं, इसीलिए अण्डे को 'Super food' भी कहा जाता है।

बन्धुगण, यदि इतना ही हेतु है तो चलिए इस मिथ्या धारणा का निराकरण आप और हम मिलकर करते हैं।

सबसे अधिक जोर इस बात पर होता है कि अण्डे में न केवल सर्वाधिक मात्रा में प्रोटीन होता है बल्कि ये प्रोटीन ही

तालिका

Product	Protion	Cholestrol (mg.)	Total Fat (gm)	Protien (gm)	Carbo	Cal. org.	Sodium	Pot.	Iron %	V.A %	V.C %	Ca %	V.d %	Mag. %	Cobalamine
Egg	1	186.5	5	6	0.6	78	62	63	3	5	0	2	10	1	10
Milk	1 cup	12.2	2.4	8	12	103	107.4	366	0	2	0	30	0	6	18
Tofu	100 gm	0	4.8	8	1.9	76	7	121	30	1	0	35	0	7	0
Paneer	100 gm	56.2	12	15	12	250	22.1		12%	14%					
Cheese	100 gm	100 mg	32	18 gm	3.7	371	1671	132	3%	18%	0%	104	5	6	25
Soyabean	100 gm	0	20	44	30	440	2	1797	87	0	10	27	0	70	0
Rajma	100 gm	0	0.8	24	60	333	24	1406	45	0	7	14	0	35	0
Urad	100 gm	0	0.8	24	60	333	24	1406	45	0	7	14	0	35	0
Tuhar	100 gm	0	0.8	24	60	333	24	1406	45	0	7	14	0	35	0

स्पष्ट है कि अण्डा इस प्रकार का पोषण स्रोत कतई नहीं है जैसा कि उसे परिभाषित, विज्ञापित और प्रक्षेपित (Project) किया जाता है।

श्रेष्ठतम होता है। पक्ष वाले यही कहते हैं कि केवल अण्डे में ही सभी प्रकार के अमीनो एसिड्स, विशेष रूप से सभी 9 Essential Amino Acid उपलब्ध हैं जो किसी समकक्ष शाकाहारी भोजन में नही हैं। **सम्भवतः इस प्रकार का झूठ किसी सुनियोजित षड्यंत्र के माध्यम से आम जनमानस में धीरे-धीरे प्रवेश कराया गया।** हमारे बचपन से ही, हमने भी एक बड़ा प्रसिद्ध आधुनिक मुहावरा सुना कि संडे हो या मंडे, रोज खाओ अण्डे। क्या प्रभाव था उस जादुई मुहावरे में, कि स्वयं मेरी परिधि में भी कुछ मित्रों ने यह मानकर कि इससे पौष्टिक कुछ नहीं, अण्डे खाना प्रारम्भ कर दिया। यही नहीं इसी काल में, मैंने अनुभव किया कि एक प्रचलन सा चल पड़ा कि शरीर को पुष्ट करना है तो अण्डे खाने ही पड़ेंगे। पता नहीं पर शायद यही वो काल था अर्थात् पिछले ३०-४० वर्ष, जहाँ भारत में तेजी से अण्डा खाने वालों की संख्या बढ़ी। खैर, पुनः लौटते हैं इस पौष्टिकता के विश्लेषण पर।

यह तर्क कि सबसे ज्यादा और सबसे समृद्ध प्रोटीन केवल अण्डे में होता है, सर्वथा असत्य है। एक बड़े अण्डे में जिसका वजन लगभग ५० ग्राम होता है केवल ६ से ७ ग्राम

प्रोटीन होता है वो भी पूरा अण्डा खाया जाये तो। और कुछ लोग जो केवल Egg White खाते हैं तो केवल ३ से ३.५ ग्राम ही प्रोटीन मिलता है। मानव शरीर के लिए प्रतिदिन ०.८ मि.ग्रा./कि.ग्रा. प्रोटीन की आवश्यकता होती है अर्थात् ७० कि.ग्रा. के व्यक्ति के लिए लगभग ५६ ग्राम प्रोटीन प्रतिदिन आवश्यक है। और यदि हम इसे तुलना करें दूसरे शाकाहारी भोज्य पदार्थों से तो इतना बल्कि इससे कुछ अधिक प्रोटीन १ कप दूध, १०० ग्राम टोफू, ५० ग्राम पनीर और ५० ग्राम चीज में भी होता है।

यही नहीं इससे लगभग दो गुना प्रोटीन ५० ग्राम तूहर, उड़द और राजमा जैसी दालों में तथा इससे चार गुना प्रोटीन ५० ग्राम सोयाबीन में होता है। स्पष्ट है जहाँ तक कि प्रोटीन की मात्रा का सवाल है अण्डे में कोई Bumper मात्रा में प्रोटीन नहीं है जो शाकाहारी भोजन में उपलब्ध नहीं।

अब आती है बात तथाकथित गुणवत्ता की। यह कहना कि केवल अण्डे में सभी 9 Essential Amino Acids होते हैं, पुनः मिथ्या है। ये सभी 9 Essential Amino Acids दूध, दही, पनीर इत्यादि में तो उपस्थित हैं ही, इसके अतिरिक्त आपको जानकर आश्चर्य होगा कि ये 9 Essential Amino Acids सोयाबीन, किनोआ और कूटू (Buck Wheat) में भी उपलब्ध होते हैं।

गुणवत्ता का प्रश्न उठने पर कई बन्धु ये भी तर्क देते हैं कि प्रोटीन की Biological Value (BV) अच्छी हो तभी वो काम का है। Biological Value मापदण्ड है प्रोटीन के उस भाग का जो आसानी से अवशोषित होकर शरीर की विभिन्न कोशिकाओं में; संरचना में काम आता है। मुर्गी के अण्डे की BV ६४ एसोया मिल्क की ६१, गाय के दूध की

९० और पनीर की BV ८६ होती है। अर्थात् इस मापदण्ड पर भी अण्डा एक मात्र विजेता नहीं है।

प्रोटीन के अतिरिक्त अन्य पोषक तत्वों की भी अगर हम बात करें जैसे कार्बोहाइड्रेट, वसा, कोलेस्ट्रोल, आयरन, Vit A, C, D, B कैल्शियम, मैग्नीशियम, सोडियम, पोटैशियम इत्यादि; जिनकी मात्रा भी गत पृष्ठ पर दी गई तालिका में आप देख सकते हैं और साथ ही में तुलनीय शाकाहारी Counter Parts की तुलना में Only Stand out Option नहीं है, बल्कि कुछ मानकों पर कमतर है और कुछ हानिकारक मानकों पर घातक भी।

- डॉ. प्रशान्त अग्रवाल
डर्मेटोलोजिस्ट एवं कास्मेटोलोजिस्ट
डर्माडेन्ट क्लिनिक, उदयपुर

क्रमशः

प्रतिस्वर

श्री अशोक आर्य जी
सम्पादक, सत्यार्थ सौरभ
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
उदयपुर

समादरणीय महोदय,
सप्रेम नमस्ते।

लम्बी प्रतीक्षा के उपरांत अप्रैल २०२० से जनवरी २०२१ का सत्यार्थ सौरभ का अंक प्राप्त हुआ। इस अंक में नवलखा परिसर की पूरी गाथा और वर्तमान की आगामी योजना का विस्तार से समावेश किया गया है। सोलह संस्कार परिसर का निर्माण भावी पीढ़ी को संस्कृत करने में सहायक होगा यह अच्छा प्रयास है।

अंक में संरक्षक सदस्यों की सूची में मेरा नाम कृष्णलाल डंग के स्थान पर कृष्ण चन्द्र डंग लिखा गया है। मैंने डाक से पत्र श्री सुरेश पाटौदी, संस्थान के नाम से और पत्र सम्पादक 'सत्यार्थ सौरभ' श्री अशोक आर्य को सम्बोधित किया था और लिखा था।

मैं 'सत्यार्थ सौरभ' के पहले अंक से ग्राहक हूं और आपके सम्पादन की प्रशंसा करता हूं। हर अंक में सामग्री बड़ी रोचक और सूचनाप्रद होती है। आपके सम्पादन में हर विषय को नाप तौल कर ही सम्मिलित किया जाता है। मैं 'सत्यार्थ सौरभ' के संरक्षक सदस्य के लिए ग्यारह हजार रु. का चैक भेज रहा हूं। पावती भिजवाने का कष्ट करें।

मैंने २३.२.२००० से.२८.२.२००० सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन, जिस बीच श्री मुनि वशिष्ठ जी, स्वामी संकल्पानन्द बने थे, attend किया था और सत्यार्थ प्रकाश प्रचार मण्डल का सदस्य बन गया था और मुझे आप द्वारा लिखित 'वैदिक संस्कृति एक सरल परिचय' प्राप्त हुई थी। आपकी लेखनी से बहुत प्रभावित हुआ और पुस्तक की २५ प्रतियां न्यास से मंगवा कर बेचीं।

सत्यार्थ सौरभ के हर अंक के साथ कोई न कोई पुस्तक भेजी जाती है, इसी क्रम में मुझे 'सत्यार्थ दूत' सरोज आर्य द्वारा लिखित पुस्तक प्रेय से श्रेय की प्रति मिली। उनके गहन अध्ययन और लेखनी से बहुत प्रभावित और सेवानन्द प्रचार प्रसार न्यास के वैदिक प्रचार के कार्यकलापों से अवगत हुआ, न्यास इस कार्य में कई नियमित योजनाएं चला रहा है जो प्रशंसनीय हैं। मैं सेवानन्द सरस्वती न्यास से जुड़ गया।

आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक जी के वैदिक विज्ञान पर कार्य से बहुत प्रभावित होकर मैं 'स्वस्ति पंथा न्यास' का वार्षिक सहयोगी हो गया।

अक्टूबर १९९८ में गुरुकुल वृन्दावन रोड मथुरा पर भी गया और गुरुकुल का भ्रमण किया, आचार्य स्वदेश जी से मिला और पुस्तकालय का कार्य देखा, आचार्य प्रेमभिक्षु जी के कार्य का प्रशंसक हूं।

ईश्वर आपको सपरिवार स्वस्थ रखे और वैदिक धर्म की सेवा चिरकाल तक करते रहें। मेरे से मेरी फोटो दूरभाष पर मंगवाई गई थी जो मैं कोरोना काल में कोई सहायक उपलब्ध न होने के कारण भेज नहीं पाया था,फोटो इस पत्र के साथ संलग्न है।

मैं हिन्दी लेखन में कमजोर हूं। कृपया त्रुटियों के लिए क्षमा करें। शुभकामनाओं के साथ।

भवदीय

डॉ. कृष्णलाल डंग
सेवानिवृत्त संयुक्त संचालक,पशु चिकित्सा सेवाएं
३१/३ प्रेम विहार, वार्ड नं. २ बद्रीपुर, पावंटा साहिब १७३०२५
जिला सिरमौर, हिमाचल प्रदेश

चमत्कार को दूर से करें नमस्कार

बाबा और बुवा के ढकोसलों के साधन बने चमत्कारों का विरोध करने पर उनके समर्थकों को संत-महात्माओं के किए चमत्कार याद आते हैं। सैकड़ों वर्ष पूर्व जो बातें हुईं, उनका कोई प्रमाण आज उपलब्ध नहीं है, इसीलिए उनकी शास्त्रीय जाँच-पड़ताल भी असंभव है। ऐसे चमत्कारों के संदर्भ में उन्हें 'सत्य' समझकर महत्त्व देना असंगत है। ऐसा समझनेवालों को निम्नलिखित विचारों पर गौर करना चाहिए।

आधुनिक काल के संत तुकडोजी महाराज ने चमत्कारों के दुष्परिणामों को बताने की कोशिश इन शब्दों में की है।

चमत्कारों के पीछे पड़ कर, अनेक हो गए हैं बरबाद,
हे सज्जनो, अब न करो किसी चमत्कार का वर्णन।
गाँव में आकर, भोले-भाले लोगों के पीछे पड़ कर,
ये ढोंगी इन्हें लूटते हैं, लोग प्रयत्नों का मार्ग छोड़ते हैं।
थोड़े में लाभ चाहते हैं।
चमत्कारियों के भुलावे में आकर अनेक हो गए हैं बरबाद!

चमत्कारों पर विश्वास करना और उसे प्रेरित करनेवाले बाबा एवं बुवा को सराहने में नुकसान यही है कि लोग प्रयत्न और पुरुषार्थ से विश्वास खो बैठते हैं। वे दूसरों की हालत भी ऐसी ही बनाते हैं। चमत्कारों के संदर्भ में यह पलायनवादी भूमिका बिलकुल स्पष्ट नजर आती है। चमत्कारों से व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में केवल नुकसान ही होता है। ऐसी परिस्थिति में चमत्कारों को साबित करने की जिम्मेदारी, उसके दावेदार बुवा-बाबा पर ही सौंपनी चाहिए। तब भारतीय संविधान द्वारा बताया हुआ वैज्ञानिक दृष्टिकोण बिलकुल आसानी से सामान्य जनता समझ पाएगी। तभी यह समझ में आएगा कि कार्य-कारण भाव को छोड़कर कोई चमत्कार नहीं होता। चमत्कारों के जरिए साधुत्व का ढोंग करनेवाले, गुरुगीरी रचानेवालों को भी झटका लगेगा। लोगों की वर्तमान ढकोसलों को माननेवाली प्रवृत्ति चिंताजनक है। विडंबना यह है कि आडंबर एवं ढकोसलों को चुनौती देनेवाली महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति को ही अपराधियों के कठघरे में खड़ा किया जाता है। ऐसे में फिर अंधविश्वास उखाड़ने के लिए कानून बनाने की बात लोगों को नहीं जँचती।

मनुष्य का सबसे करारा शस्त्र उसकी बुद्धि है। मानवीय संस्कृति का विकास उसकी प्रज्ञा के विकास से संबद्ध रहा है। 'बुद्धि से जाँच लूँगा और साबित होने पर ही मान लूँगा। यह शास्त्रीय दृष्टिकोण की प्रतिज्ञा होती है। उस प्रतिज्ञा को भुलाकर ही चमत्कारों पर विश्वास किया जा सकता है। चमत्कारों को स्वीकार करना मानसिक गुलामी की शुरुआत होती है। ढकोसले के कारण यह गुलामी और भी मजबूत होती है। एक उदाहरण के जरिए यह स्पष्ट हो जाएगा कि ढकोसलों को माननेवाले लोगों के विचार कितने मजेदार हैं-

तरडगाँव, जि. सतारा (महाराष्ट्र) में रहनेवाला विलासबाबा पानी से आग जलाकर यज्ञ करता था। सिक्कों से विभूति पैदा करता था। उसके इस चमत्कार को सरेआम घोषित करने के लिए हमने उसके विरोध में उसके ही गाँव में सभा का आयोजन किया। भारी भीड़ जमा हो गई। हमने चमत्कारों के प्रयोग शुरू किए। पानी से आग जलाई, सिक्कों से विभूति निकाली। अन्य चमत्कारों की ओर मुड़ने से पहले ही विलासबाबा के पचासों भक्त मंच पर दौड़ते आ गए और चिल्लाए, 'आप जो कर रहे हैं, वे मामूली प्रयोग हैं। रासायनिक पदार्थों का थोड़ा-सा ज्ञान रखनेवाले स्कूल के बच्चे भी ये प्रयोग कर सकते हैं। विलासबाबा की बात अलग है, उनके चमत्कार दैवी शक्ति के कारण होते हैं।' ऐसा स्पष्टीकरण आगे की बात को अपने आप स्पष्ट करता है।

सत्य साईं बाबा एवं अन्य ऐसे बाबाओं-महाराजों की अपेक्षा जादूगर सौ गुना प्रभावी चमत्कार दिखाते हैं, लेकिन इस वजह से कोई उन्हें महाराज समझकर उनके पैर नहीं छूता। जीवन के प्रश्नों का उत्तर उनसे कोई नहीं पूछता। जादूगर मनोरंजन करनेवाला कलाकार होता है। उसके चमत्कार ही उसकी कला का आविष्कार होते हैं। लेकिन चमत्कार करनेवाले बाबा एवं बुवा की बात ही अलग होती है। खाली हैट से जिंदा खरगोश

निकालनेवाले जादूगर के पापी पेट का सवाल होता है। लेकिन अपने ही खाली हाथ से थोड़ी विभूति निकालनेवाला बाबा परम पूजनीय होता है। बाबा के दिए हुए चुटकी भर भस्म से जीवन की मनोकामनाएँ पूरी हो जाएँगी, ऐसा भ्रम भक्त अपने मन में पालते हैं। कोर्ट में मुकदमे का सामना करते समय अपराधी के कठघरे में खड़ा भक्त बाबा की विभूति लेकर खड़ा रहता है। इधर-उधर देखकर चुपचाप पलक झपकते उस विभूति को फूँक देता है। उसका मन कहता है कि विभूति के दो कणों के फरियादी के गवाह तक पहुँचने से उसकी गवाही अपने पक्ष में आ जाएगी। दो कण वकील तक पहुँच जाएँ तो उसका विरोध अथवा प्रतिवाद प्रभावी नहीं रहेगा और बाबा के पावन स्पर्श से प्राप्त उस विभूति का एक कण भी जज तक पहुँचेगा तब तो वह केस ही जीत जाएगा। लेकिन इन सभी खयालों का प्रमाण क्या है? एकाध व्यक्ति अच्छा भाषण देता है, इसका मतलब यह नहीं कि वह अच्छा गाना गाता है अथवा नृत्य करता है। ऐसा कहना जितना निरर्थक है, उतनी ही अर्थशून्यता भस्म को दैवी शक्ति का प्रतीक मानने में है। लेकिन इन प्रश्नों को पूछना मना है क्योंकि ढकोसलों के प्रभाव से बनी मानसिक गुलामी मनुष्य की बुद्धि को पंगु, कमजोर और अंधा बना देती है। इसकी गिरफ्त में आए मनुष्य का व्यक्तित्व टूट जाता है। वह बुवा, बाबा, स्वामी और गुरु की अलौकिक शक्ति के हाथ में अपने आपको सौंप देता है। मनुष्य जीवन के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बुद्धि-वैभव, निर्णय-क्षमता, विवेकी विचारों की क्षमता ढकोसले के पास गिरवी पड़ जाते हैं। व्यक्ति पराश्रित बन जाता है। आखिरकार परिवर्तन की लड़ाई बहुत कठिन बन जाती है। कोई भी बाबा अथवा बुवा समाज-व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन की बात नहीं करता। स्वयं की शरण में भक्त आ जाए, ऐसा आदेश देता है। वह भक्तों के कल्याण का मार्ग बताता है। भक्तों के लिए बाबा का शब्द ब्रह्मवाक्य और नैतिक होता है। विरोध में बोलनेवालों के लिए धमकी से लेकर मारपीट तक के मार्ग अपनाए जाते हैं। अपने आश्रितों को उनके कल्याण का आश्वासन दिया जाता है। उनके लिए सिर्फ एक शर्त रखी जाती है कि वे अपनी बुद्धि का इस्तेमाल न करें। इस प्रकार ढकोसले के सभी पंथ, उपपंथ फासीवाद के लिए अनुकूल आधार निर्मित करते हैं।

ढकोसले के विरुद्ध संघर्ष महाराष्ट्र में कोई नई बात नहीं है। सन् १९३५ में महाराष्ट्र में किर्लोस्कर मासिक बहुत चर्चित हो गया था। उसके जरिए ढकोसले के विरुद्ध 'ढकोसले का सर्वनाश' संघ स्थापित किया गया। उस संघ के सदस्यों को दिए जानेवाले प्रवेश पत्रक का नमूना ऐसा था- 'मेरे समाज में बुवा एवं महाराज के पीछे दीवाने स्त्री-पुरुषों की संख्या बहुत है। ये बुवा जल्द ही बुवाशाही को पैदा करते हैं जो मनुष्य को निष्क्रिय बनाता है। लोग बुवा की कृपा से सब कुछ प्राप्त करने की होड़ में शामिल होते हैं, जबकि बुवाशाही समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में बाधा बन जाती है। वह पूरी तरह से नष्ट हो जाए, ऐसा मेरा मानना है, इसीलिए मैं इस संघ का सदस्य बनने जा रहा हूँ।'

मनुष्य और पशु में आहार, निद्रा, भय और मैथुन की प्रेरणाएँ समान हैं। मनुष्य के पास पशु से अधिक बुद्धि नामक प्राकृतिक देन है, जिसे हम विवेक कहते हैं। यह मनुष्य को भले-बुरे का ज्ञान देता है। लेकिन ढकोसले में अटका व्यक्ति स्वयं ही अपनी बुद्धि की हत्या करता है, उसमें और पशु में कोई अंतर नहीं रह जाता। 'मुद्राराक्षस' नाटक में आर्य चाणक्य ने कहा है, कि 'मेरे सगे-संबंधी चले गए, लोभी बनकर आए लोग चले गए, सैनिक गए, धन गया, कोई परवाह नहीं, लेकिन मेरी बुद्धि मुझे धोखा न दे।' हमारे देश में धर्म और समाज के क्षेत्र में बौद्धिक गुलामी अधिक थी और आज भी उतनी ही है। परंपरा से चली आ रही चीज ठीक है, उसके संदर्भ में तथा अन्य बातों के संदर्भ में आशंका न हो फिर सुधार की बात क्या खाक की जा सकती है? कोई भी परिवर्तन ईश्वर के अवतार से ही होगा, ऐसी अवतारवाद की भावना समाज में दृढ़ है। इसीलिए अपनी करनी से ही कुछ प्राप्त करने की बजाय स्वतंत्र

प्रज्ञा को त्यागकर किसी विभूति की शरण में जाने का ऐब समाज में व्याप्त है। ऐसी विभूतियाँ बुवा, स्वामी, गुरु के रूप में मौजूद हैं। लोग भी अपने परिवार एवं राष्ट्र को उपेक्षित रखकर अपना तन-मन बाबा के पास गिरवी रखते हैं। बाबा-बुवा और उनकी बिरादरी में बुद्धि-हत्या की ऐसी फैक्टरियाँ खुली हुई हैं। उससे समाज कैसे बचेगा, यह एक सामाजिक प्रश्न है। बहुसंख्य बाबा बताते हैं कि जग मिथ्या है, माया है, क्षणिक है, तो फिर समाज के प्रति जिज्ञासा रखकर क्या होगा? ऐसे में अपने आप निरर्थकता की मानसिकता बढ़ती है। साहस और उत्साह शेष नहीं रहता। दैववाद और अंधविश्वास का बोलबाला रहता है।

अन्याय के प्रति चिढ़, प्रतिकार करने की तीव्र इच्छा, परिवर्तन की पुरुषार्थी वृत्ति ढकोसले की बुनियाद को खोखला कर सकती है लेकिन समाज ढकोसले में ही तल्लीन है।

साधुत्व के ढोंग से दूर रहने के लिए ऐसा संकल्प करना चाहिए कि मैं अपने आत्मविश्वास को खोने नहीं दूँगा। मेरे प्रश्नों को सुलझाने का मार्ग वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं विवेकवाद ही दे सकता है। सर्वसामान्य नीति-संकेतों का पालन करने से आचरण निर्विवाद बनता है। अपनी ही मर्यादा में रहकर, इन्सानियत के आधार पर, धीरज के साथ जीने में ही मनुष्य की प्रतिष्ठा है। स्वयं साधुत्व के ढकोसले से दूर रहने में ही जीवन की सार्थकता है। जो गुरु अथवा बाबा भक्तों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने की आजीवन जिम्मेदारी लेता है, वह उसे अज्ञान एवं अंधकार की खोह में धकेल देता है। सच्चा गुरु, भक्त को आत्मनिर्भर बनाता है, संघर्ष में लड़ने की हिम्मत देता है। उसे सजग एवं मजबूत बनाता है। **अपनी विवेक-बुद्धि के रूप में ऐसा गुरु प्रत्येक मनुष्य के पास होता है, जो ढकोसले से और गुरुगीरी के आडंबर से हमें मुक्ति दिलाता है।**

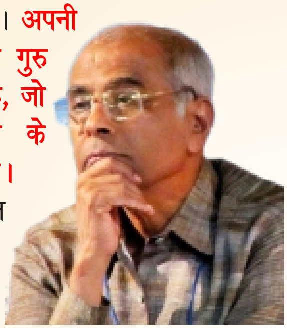

साभार - अंधविश्वास उन्मूलन पहला भाग - (विचार)

- स्व. डॉ. नरेन्द्र डाभोलकर

फार्म.IV

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विशिष्टियों के बारे में विवरण जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम दिन के पश्चात् प्रथम अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

१. प्रकाशन का स्थानः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

२. प्रकाशन की नियत अवधिः– मासिक

३. मुद्रक का नामः– अशोक कुमार आर्य — राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

४. प्रकाशक का नामः– अशोक कुमार आर्य — राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

५. सम्पादक का नामः– अशोक कुमार आर्य — राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

६. उन व्यक्तियों के, जो समाचार पत्र के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के, जो कुल पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक अंश के धारक हैं, नाम और पते।
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल
गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

मैं अशोक कुमार आर्य घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

तारीखः– ०७.०३.२०२१

प्रकाशक के हस्ताक्षर

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

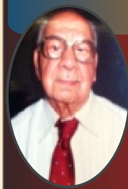

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

अब मात्र कीमत ₹ 45 में

४००० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

आज धर्माचार्य वा अध्यात्मवादी कहे जाने वाले महानुभाव प्रायः कहा करते हैं कि योग साधना करने अथवा धार्मिक जीवन जीने के लिए सृष्टि विज्ञान की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसे महानुभाव भूल जाते हैं कि जिस सृष्टि में हम जन्मे व जी रहे हैं और मरणोपरान्त पुनः जन्म लेकर इसी में आयेंगे, उस सृष्टि के विज्ञान को समझे बिना हम इसके उपयोग करने में भी सफल नहीं हो सकते, तब मोक्ष तो कैसे सम्भव है। ध्यान रहे कि विवेक अर्थात् सत्यासत्य का बोध योग का प्रथम साधन है। सम्पूर्ण सृष्टि विज्ञान भी इसी विवेक का दूसरा नाम है। सृष्टि विज्ञान के बिना ईश्वर की सत्ता की सिद्धि भी सम्भव नहीं, तब उस पर दृढ़ विश्वास तो कैसे सम्भव है? और जब दृढ़ विश्वास नहीं होगा, तब ईश्वरीय मर्यादा का पालन कैसे होगा और ईश्वराज्ञा के पालन के बिना संसार में कभी सुख नहीं हो सकता। दूसरी ओर सृष्टि विज्ञान को जाने बिना ईश्वर की शक्ति व स्वरूप का भी यथावत् बोध किसी को नहीं हो सकता और मिथ्या आस्थाओं व अन्धविश्वासों पर हजारों ईश्वरों की कल्पना किंवा मिथ्या स्वरूप वाले एकेश्वरवाद की भ्रान्तियों के कारण धार्मिक कहाने वाला मानव समुदाय विघटन व साम्प्रदायिक व जातीय हिंसा व वैर की अग्नि में वर्तमान की भांति जलता रहेगा। जब सृष्टि विज्ञान के सम्यक् विवेक से एक निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक व सर्वज्ञ ईश्वर का यथार्थ बोध होगा, तब योग साधना व मोक्ष के अभिलाषी जनों को अपने उद्देश्य में सुगमता व सफलता अवश्य मिलेगी, अन्यथा वे मात्र नेत्र बंद करने अथवा शारीरिक कसरत को ही योग समझकर पथभ्रान्त होते रहेंगे तथा दूसरों को भी करते रहेंगे। इसके साथ ही वे वर्तमान में अनेकों कथित धर्मगुरुओं की भांति नाना जघन्य अपराधों, आर्थिक साम्राज्य खड़ा करने के दुःखद प्रयासों एवं जन बल के आधार पर कानून व्यवस्था को चुनौती देने, ईश्वर के नाम पर आतंक फैलाने जैसे दुष्कर्मों को करके राष्ट्र व विश्व को क्लेश व अशान्ति देते रहेंगे। उधर ईश्वर के विज्ञान को जानकर सभी मानव उसी प्रकार एकमत हो सकेंगे, जैसे आज भौतिक विद्याओं को सभी देश, सम्प्रदाय, भाषा व कथित जाति के भेद भुलाकर एक साथ शान्तिपूर्वक पढ़ते हैं। इस कारण सृष्टि विज्ञान का गम्भीर अध्ययन प्रत्येक धर्मपिपासु, मानवतावादी, ईश्वर आराधक, समाज सुधारक व राजनैतिक व्यक्तियों को अवश्य करना चाहिए। ध्यान रहे सृष्टि विज्ञान का अर्थ केवल Cosmology नहीं अपितु वैदिक विचारधारा के अनुसार सम्पूर्ण theoretical physics सृष्टि विज्ञान का ही रूप है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि वर्तमान theoretical physics की विविध शाखाएं सृष्टि का सम्पूर्ण एवं निर्भ्रान्त ज्ञान देने में नितान्त असमर्थ हैं। हजारों वैज्ञानिकों का श्रम, अरबों-खरबों डालर का व्यय एवं लम्बा काल व्यतीत होने के पश्चात् भी अनेकों समस्याएं आज भी अनसुलझी बनी हुई हैं। ऐसी स्थिति में हमारा वैदिक विज्ञान ही उन्हें एक सुमार्ग दिखा सकता है। जब वर्तमान theoretical physics की समस्याओं को हमारा वैदिक विज्ञान सुलझा देगा, तब वैज्ञानिकों को ईश्वर एवं जीवात्मा जैसे चेतन तत्वों के अस्तित्व एवं स्वरूप की वैज्ञानिकता का यथावत् बोध होगा। इससे जहाँ विभिन्न सम्प्रदाय एकमत होकर वैज्ञानिक धर्म की ओर प्रवृत्त होंगे वहीं वर्तमान विज्ञान भी प्राणिमात्र के लिये हितकारिणी एवं अनिवार्य टैक्नोलाजी का ही आविष्कार करके सच्चे एवं कल्याणकारी विकास के मार्ग पर ही चलेगा।

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक (वैदिक वैज्ञानिक)
(प्रमुख, वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)

वैदिक धर्म प्रसार की प्रेरणा (कुमारिल भट्ट को एक कन्या से मिली)

कथा सरित

काशीराज सुधन्वा ने भी बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया और घोषणा कर दी कि राज्य की सम्पूर्ण जनता बौद्ध धर्म स्वीकार कर ले अन्यथा राज्य से बाहर चली जावे। यहां अन्य धर्मावलम्बी नहीं रहेगा। वैदिक धर्म का सूर्य अस्ताचल की ओर बढ़ने लगा। जो धर्म एक मात्र ग्राह्य था वह राजाज्ञा से उपेक्षित कर दिया गया। बौद्धों की नश्वरता क्षणिकता ने सबको घेरा। राजा सुधन्वा की पुत्री राजकुमारी को यह अच्छा नहीं लगा। भयवश विरोध न कर सकी। आन्तरिक पीड़ा और मनोव्यथा हुई। वैदिक धर्म और संस्कृति को छिन्न भिन्न होते देख उसका हृदय वेदना से कराह उठा।

राजकुमारी एक दिन राजमहल के द्वार पर खड़ी केश सुखा रही थी। मन में अपार विषाद था। वह कह रही थी- किं करोमि, क्वं गच्छामि? क्या करूं, कहा जाऊं? क्या होगा सभी बौद्धधर्मी हो रहे हैं। वेदों की रक्षा कौन करेगा, पठन, पाठन कौन करेगा? ऋषि मुनियों की जन्म जन्म की तपस्या का फल वेद, उपनिषद् धर्म ग्रन्थों का उद्धार कौन करेगा? जहां पवित्र ऋचाओं का पाठ होता था वहां अब बौद्ध धर्म का उपदेश दिया जा रहा है। इस अन्तर्द्वन्द्व में उसके आंसू भर आये। उधर गली से चिन्ता मगन सिर नीचा किए कुमारिल भट्ट चला जा रहा था। राजकुमारी के आंसुओं का तप्त प्रवाह उसकी भुजा पर पड़ा। उसकी दृष्टि तीव्रता से राजमहल पर गई, देखा एक शोडषी बाला रुदन कर रही है। अस्फुट ध्वनि 'किं करोमि, क्वं गच्छामि?' कुमारिल भट्ट के कर्ण विहर को चीरती हुई उसके हृदय से जा टकराई। वह सोचने लगा जिस देश की शोडषी बाला अपने धर्म के लिये चिन्तित हो, सुख भोग विलास को धर्म के समक्ष तुच्छ समझती हो, उसके हृदय में धर्म संस्कृति की रक्षा की प्रचण्ड ज्वाला जल रही हो, जो अपना सर्वस्व स्वधर्म पर स्वाहा करने को तत्पर हो क्या वह धर्म कभी विलुप्त हो सकता है, उसने निश्चय कर लिया कि वह अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म की रक्षा को समर्पित कर देगा। उसके हृदय में उत्साह उमंग तरंग भर आया। भुजा उठाकर कहने लगा राजकुमारी इस तरह रुदन मत कर। वैदिक धर्म का सूर्य कभी लुप्त नहीं हो सकता।

जब तक इस धरती पर कुमारिल भट्ट जीवित है तब तक प्राण प्रण से वह इसकी रक्षा करेगा।

कुमारिल भट्ट ने बौद्ध गुफाओं से पहले बौद्ध धर्म की सभी गूढ़ बातें समझीं और फिर उसका विरोध कर बौद्ध गुरुओं को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। बौद्ध गुरु परास्त हुए। कुमारिल विजयी हुआ। नगर में उसकी चर्चा फैल गई। राजकुमारी अबला नहीं सबला थीं उसने वैदिक धर्म की रक्षा के लिए असाधारण कार्य किया। वह कुमारिल भट्ट की प्रेरणा या पथ प्रदर्शिका बनी।

साभार- हितोपदेशक

जीवन में स्वस्थ रहने के लिए अपनायें 10 तरीके

चिकित्सा जगत में क्विनोआ को 'चिनोपोडियम क्विनोआ' के नाम से जाना जाता है। यह एक फूलदार पौधा है, जो दक्षिण अमेरिका के एंडीज पर्वत पर बहुतायत में पाया जाता है। यह ऊंचाई में करीब एक से दो मीटर तक बढ़ता है। मुख्य रूप से इसके बीजों को खाने के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसमें कई औषधीय गुण पाए जाते हैं। यहां हम क्रमवार क्विनोआ के फायदे बताने जा रहे हैं, जिनके माध्यम से आपको इसकी उपयोगिता को समझने में आसानी होगी।

1. वजन घटाने में लाभदायक

क्विनोआ बढ़ते वजन या मोटापे की समस्या से ग्रस्त लोगों के लिए कारगर साबित हो सकते हैं। यह बात जर्नल आफ न्यूट्रिशन एंड फूड साइंस द्वारा किए गए एक शोध से सिद्ध होती है। शोध में माना गया है कि क्विनोआ एक ऐसा खाद्य पदार्थ है, जिसमें बीटाइन (Betaine) नाम का एक खास तत्व पाया जाता है। यह तत्व मोटापे की समस्या को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है ।

2. स्वस्थ हृदय -कोलेस्ट्राल

क्विनोवा में ट्राइग्लिसराइड सीरम को कम करने का प्रभाव मौजूद होता है। वहीं, दूसरी ओर क्विनोवा पोटेशियम से भी समृद्ध होता है, जो हृदय की धड़कन को नियंत्रित रखने के लिए अहम् माना जाता है। इसके साथ ही यह गुड कोलेस्ट्रोल को बढ़ाने का काम भी कर सकता है । इस आधार पर हृदय के लिए क्विनोआ लाभ सहायक माने जा सकते हैं।

3. डायबिटीज और बीपी

क्विनोआ एक साबुत अनाज है, जो मधुमेह के लिए काफी फायदेमंद माना गया है। इस बात का जिक्र एनसीबीआई (National Center for Biotechnology Information) के एक शोध में भी मिलता है। शोध में माना गया है कि क्विनोवा का सुबह और दोपहर के समय सेवन करने से टाइप-२ डायबिटीज के रोगियों को लाभ मिल सकता है। यह शरीर में इन्सुलिन की सक्रियता को बढ़ाकर ब्लड शुगर को कम करने में मदद कर सकता है। वहीं क्विनोआ से संबंधित एक अन्य शोध में इसमें मौजूद एंटीहाइपरटेंसिव (ब्लड प्रेशर कम करने वाला) प्रभाव का जिक्र मिलता है । इस प्रभाव के कारण शुगर के साथ-साथ ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में भी क्विनोआ मददगार साबित हो सकते हैं।

4. सूजन को कम करें

क्विनोआ में सैपोनिन्स नाम का एक खास तत्व पाया जाता है। यह तत्व एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण से समृद्ध होता है। यही वजह है कि हल्की और सामान्य सूजन से राहत पाने के लिए क्विनोआ को एक घरेलू उपचार के तौर पर इस्तेमाल में लाया जा सकता है।

5. पाचन के लिए लाभदायक

एक शोध में माना गया कि इसमें ट्रिप्सिन इन्हिबिटर्स (ट्रिप्सिन- एक प्रकार का एंजाइम) कम मात्रा में उपलब्ध होते हैं। वहीं, यह भी बताया गया है कि यह ट्रिप्सिन इन्हिबिटर्स प्रोटीन के पाचन और अवशोषण को बाधित करने का काम करते हैं। वहीं, दूसरी ओर इसमें मौजूद फाइबर आंत में मौजूद अच्छे बैक्टीरिया को बढ़ावा देने का कम करते हैं, जो पाचन में सहायक होते हैं।

6. एनीमिया (खून की कमी)

चूहों पर आधारित क्विनोआ पर किए गए एनसीबीआई के एक शोध में इस बात को साफ तौर पर स्वीकार किया गया है कि आयरन से भरपूर क्विनोआ के बीज में एंटीएनेमेटिक (एनीमिया को ठीक करने वाला) प्रभाव पाया जाता है। इस कारण यह हीमोग्लोबिन को बढ़ाकर एनीमिया से राहत दिलाने में मदद कर सकता है ।

8. कैंसर से बचाव के लिए

एक शोध में इस बात का जिक्र मिलता है कि क्विनोआ के बीज में एंटीकैंसर (कैंसर कोशिका के विकास को रोकने वाला) प्रभाव पाया जाता है। यह प्रभाव मुख्य रूप से लिवर और स्तन कैंसर के खिलाफ बेहतर काम कर सकता है ।

9. हड्डियों को मजबूत कर आस्टियोपोरोसिस से बचाए

क्विनोआ में बीटा-एसीडोसोन नाम का एक फाइटोएसिडिस्टेरायड पाया जाता है। यह फाइटोएसिडिस्टेरायड हड्डियों के घनत्व को बढ़ाकर उन्हें मजबूती प्रदान करने में सहायक हो सकता है।

10. बालों को मजबूती प्रदान करे

बालों को मजबूती प्रदान करने के लिए भी क्विनोआ को इस्तेमाल में लाया जा सकता है। क्विनोआ से संबंधित एनसीबीआई के एक शोध में माना गया है कि इसमें मौजूद प्रोटीन अन्य समस्याओं के साथ ही बालों के स्वास्थ्य को बनाए रखने में भी मददगार साबित हो सकता है ।

साभार- अन्तर्जाल

शिक्षक सम्मान समारोह सम्पन्न

प्रति वर्ष की भांति सुरेश गुप्ता चौरिटेबल ट्रस्ट की ओर से स्व० सुरेशचंद्र जी गुप्ता की स्मृति में शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज हिरणमगरी द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय की तेरह अध्यापिकाओं के साथ दो महिला कार्यकर्ताओं को उनके उत्कृष्ट कार्य सम्पादनार्थ उक्त चौरिटेबल ट्रस्ट की मुख्य ट्रस्टी श्रीमती शारदा गुप्ता ने सुन्दर साड़ी सेट प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया। इनके अतरिक्त सुविख्यात वैदिक विद्वान् श्री अशोक आर्य, प्रोफेसर डा० बी एल जैन, प्रधानाचार्य श्री सत्यप्रिय शास्त्री, श्री योगेश गुप्ता, श्रीमती सरिता गुप्ता का वेदमंत्र उपरणा ओढ़ाकर अभिनन्दन गया । स्व० सुरेश जी गुप्ता के सहपाठी श्री नरेश बंसल एवं श्री योगेश जी गुप्ता ने उनकी कतिपय स्मृतियों से जुड़ी प्रमुख घटनाओं का सभा में उल्लेख किया । प्रो०(डा०) तापड़िया ने बताया कि स्व० सुरेशचंद्र जी गुप्ता आर्य समाज हिरणमगरी के संस्थापक एवं प्रथम प्रधान होने के अतिरिक्त उदयपुर में भारत विकास परिषद् के संस्थापक अध्यक्ष भी थे। वे रोटरी क्लब उदयपुर के भी अध्यक्ष रहे थे। हिरणमगरी सेक्टर ५ वसंत विहार में वसंत विहार पार्क के संस्थापक मंत्री भी रहे तथा नगर में सामाजिक कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए जाने जाते हैं। इस अवसर पर आर्यसमाज एवं दयानन्द विद्यालय की कार्यकारिणी के सदस्यगण शिक्षिकाएं, समाज के गण्यमान्य नागरिक आदि उपस्थित थे। श्रीमती ललिता मेहरा ने कार्यक्रम का संचालन किया एवं विद्यालय की मानद निर्देशक श्रीमती पुष्पा सिंधी ने सहयोग दिया। श्रीमती शारदा गुप्ता ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए बताया कि कोविड -१९ के कारण उदयपुर नगर के बालक-बालिकाओं हेतु की जाने वाली 'वेदमंत्र प्रतियोगिता' का आयोजन ट्रस्ट इस वर्ष नहीं कर सका । -ललिता मेहरा, उपाध्यक्ष

विरजानंद ट्रस्ट के अध्यक्ष डा सत्यप्रकाश जी का आकस्मिक निधन

आचार्य प्रेमभिक्षु (मथुरा) के ज्येष्ठ सुपुत्र तथा श्रीमद् दयानंद सत्यार्थप्रकाश न्यास उदयपुर के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य के ज्येष्ठ भ्राता, श्री विरजानंद ट्रस्ट मथुरा के यशस्वी अध्यक्ष डा. सत्यप्रकाश अग्रवाल का ७६ वर्ष की अवस्था में आकस्मिक निधन हो गया। डा. सत्यप्रकाश अपने पिता के आदर्शों के अनुव्रती और संवाहक थे। दैनिंदिन जीवन में संध्या व अग्निहोत्र से युक्त दिनचर्या के साथ साथ विरजानंद ट्रस्ट के दायित्वों के निर्वहन में सदैव अग्रणी रहते थे। महर्षि दयानंद द्वारा गुरुवर्य दंडी स्वामी विरजानंद जी से दीक्षा ग्रहण करने की युगांतरकारी घटना के १५० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में मथुरा में आपकी अध्यक्षता में और पूज्य आचार्य स्वदेश जी के नेतृत्व में जो अभूतपूर्व समारोह हुआ था वह आज भी आर्यों की स्मृति में सुरक्षित है। विरजानंद ट्रस्ट मथुरा के अंतर्गत चल रहे डी.ए.वी. इन्टर कालेज, वेद मंदिर तथा सत्यप्रकाशन के सभी कार्यों में आप रुचिपूर्वक निर्देशन प्रदान करते रहे। इस प्रकार आर्यसमाज के क्षेत्र में आपकी सेवायें अविस्मरणीय रहीं। आपका जाना आर्य परिवार की ही नहीं आर्यजगत् की अपूरणीय क्षति है।

डा. सत्यप्रकाश जी रसायन विज्ञान के योग्य एवं लोकप्रिय अध्यापक थे। बी.एस.ए.डिग्री कालेज में आप प्राध्यापक रहे। कालेज के कार्यकाल में भी आप सभी साथियों के मध्य समत्व भाव की मिसाल रहे। ऐसी विभूति का निधन सामाजिक क्षति है परन्तु विधाता के अटल नियम के समक्ष नतमस्तक होने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है। श्रीमद् दयानंद सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्य दिवंगत आत्मा के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए परमपिता परमात्मा के श्रीचरणों में विनय करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी आनंदमयी गोद में स्थान प्रदान करें तथा शोकसंतप्त परिवार को इस वियोगजन्य पीड़ा को सहन करने शक्ति प्रदान करने की कृपा करें। -डा. अमृतलाल तापड़िया, संयुक्त मंत्री ट्रस्ट

श्री विरजानंद ट्रस्ट मथुरा के निर्वाचन संपन्न

श्री विरजानंद ट्रस्ट मथुरा के अध्यक्ष डा. सत्यप्रकाश अग्रवाल के असायमिक निधन से उत्पन्न परिस्थिति में ट्रस्ट की अत्यावश्यक बैठक आहूत की गयी। ट्रस्ट अध्यक्ष को श्रद्धांजलि देने के उपरांत नवीन कार्यकारिणी के निर्वाचन आचार्य स्वदेश जी की अध्यक्षता में संपन्न हुए। सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान तथा ट्रस्ट से सदैव जुड़े एवं निरंतर आर्थिक रूप से ट्रस्ट को संबल प्रदान करने वाले आदरणीय सुरेशचन्द्र जी आर्य को ट्रस्ट का संरक्षक आभार प्रकाशन सहित स्वीकृत किया गया। ट्रस्ट के अध्यक्ष, मंत्री तथा कोषाध्यक्ष के पद पर क्रमशः आचार्य स्वदेश जी, डा. प्रवीण कुमार अग्रवाल तथा श्री दिनेश चन्द्र बंसल को सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि इन पदाधिकारियों को देव दयानंद के मिशन के अग्रप्रसारण हेतु शक्ति और भक्ति प्रदान करें। -अशोक आर्य

नहीं रहे स्वामी सत्यापति जी परिव्राजक

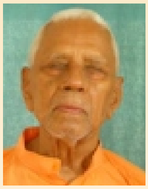

वानप्रस्थ साधक आश्रम एवं दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ के संस्थापक पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज का दिनांक ४ फरवरी २०२१ को प्रातः ७. ४५ बजे निधन हो गया। अनेकों सुप्रसिद्ध आचार्यों के प्रेरणा के स्रोत स्वामी जी का चले जाना आर्य जगत् की महती तथा अपूरणीय क्षति है। स्वामी जी का जन्म हरियाणा प्रांत के रोहतक जिले के फरमाना (महम) ग्राम में विक्रम संवत १९८४ में हुआ। मुस्लिम परिवार में जन्म लेने के कारण जन्म के संस्कार तद्वत ही थे। स्वामी जी के अनुसार उनका बचपन पशुओं को चराने, खेती करने और कुसंग में व्यतीत हुआ। उन्हें कभी नियमित विद्यालय में जाने का अवसर नहीं मिला। १९४७ की विभाजन- विभीषिका में स्वामी जी के परिवार ने हिन्दू मत स्वीकार कर लिया। मृत्यु तथा भय पर पूर्ण विजय प्राप्त करने की इच्छा इसी काल में बलवती हुयी। गंभीर उहापोह व चिंतन मन में चलता रहा जिसके परिणामस्वरूप सत्य इनके समक्ष उद्घाटित हुआ। स्वामी जी लिखते हैं कि- 'मैं इस अवस्था में बंधन रहित स्थिति का अनुभव करता था और इसके भंग हो जाने पर पुनः क्लेशों की उपस्थिति हो जाती थी। इसका परिणाम यह निकला कि मेरा 'स्व-स्वामि-सम्बन्ध' और मिथ्या अभिमान समाप्त हो गया और सभी वस्तुओं का स्वामी परमात्मा है, यह निर्णय हो गया'। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पूर्व जन्म में उपार्जित उत्तम संसकारों के कारण स्वामी जी को विवेक, वैराग्य, समाधि प्राप्त हुयी। सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन ने जीवन को कुंदन बना दिया। पश्चात दयानंद मठ रोहतक में और तदुपरांत गुरुकुल झज्जर में स्वामी ओमानंद जी महाराज के सान्निध्य में विद्याध्यन किया। स्वामी ब्रह्ममुनि जी परिव्राजक से आपने संन्यास की दीक्षा ली। स्वामी जी के सर्वप्रथम दर्शन हमने वेद मंदिर मथुरा (संस्थापक - पूज्य पिताजी आचार्य प्रेमभिक्षु जी) में किये जहां वे उनके सहयोगी श्री श्यामसुंदर जी के साथ आते रहते थे। उनका स्नेह भी हमें प्राप्त हुआ। वैदिक विद्वान् तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के निर्माण की, तथा उनके जीवन में यम-नियमों की पूर्ण स्थापना व उन्हें योग प्रशिक्षण देने की अभिलाषा से १० अप्रैल १९८६ को आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट रोजड़ की स्थापना की। आज यह संस्थान स्वामीजी के उद्देश्यों को सार्थक बना रहा है, यह सुविदित है। ऐसी महानात्मा आज हमारे मध्य नहीं है यह आर्यजगत् की अपूरणीय क्षति है। पूज्य स्वामी जी को विनम्र श्रद्धांजलि। -अशोक आर्य

श्री अमर ऐरी जी का दुखद निधन

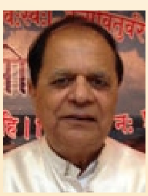

प्रसिद्ध आर्य नेता एवं आर्य समाज मरखम के प्रधान श्री अमर ऐरी जी का १७ जनवरी २०२१ को कोरोना की वजह से निधन हो गया। श्री अमर ऐरी एक निष्ठावान आर्य और सच्चे वेद मिशनरी थे। उनका जीवन आनेवाली पीढ़ी को सदैव प्रेरणा देता रहेगा। हम न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें। -अशोक आर्य

एक अभूतपूर्व कार्य

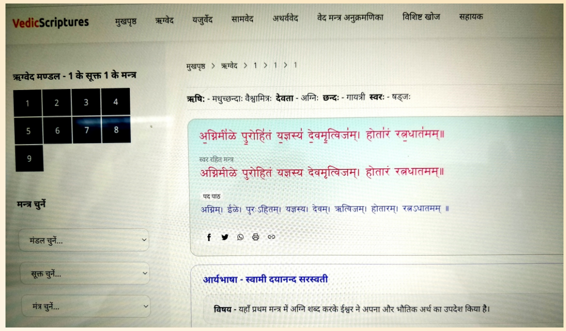

दोआबा कालेज, जालन्धर के डा नरेश कुमार धीमान ने कुछ समय पूर्व एक असाधारण कार्य किया। महर्षि दयानंद के कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को एक Android app के रूप में उपलब्ध कराया। यह एप आज ready reconer के रूप में जो सहायता उपलब्ध करा रहा है उसका वर्णन किया नहीं जा सकता। इसका सर्च इंजन अद्भुत है। आपको अगर प्रकरण का हल्का सा स्मरण भी है तो उस समुल्लास में जाकर एक शब्द टाइप करिए इच्छित प्रकरण यूनीफोंट में आ जाएगा। विशेष बात यह है कि इसे यहाँ से कापी पेस्ट भी कर सकते हैं। मोबाइल में सत्यार्थ प्रकाश-अद्भुत।

अब श्री वीरेन्द्र अग्रवाल, डा नरेश धीमान और कुछ साथियों ने मिलकर चारों वेदों को इससे भी अधिक उपयोगी प्रकार में vedicscriptures.in नामक पोर्टल पर उपलब्ध कराया है। किसी मन्त्र का पता ढूढने में जो कठिनाई होती थी वह विद्वान्, लेखक व सम्पादक ही जानते हैं। अब इस पोर्टल की मदद से किसी भी वेद का मन्त्र हो उसका एक पद टाइप कर सर्च बटन दबाते ही वह वेद मंत्र स्क्रीन पर आ जाता है। इस पृष्ठ पर स्वर सहित, स्वर रहित वेदमंत्र, उसका पता, पद पाठ, उसका अन्वय, पदार्थ, अर्थ, भावार्थ, संस्कृत अर्थ सब यूनीफोंट में उपलब्ध हैं। यहाँ से कापी पेस्ट भी किये जा सकते हैं। यह देन विद्वानों, लेखकों, संपादकों के कितने काम आयेगी इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। वेद के अध्येताओं के लिए यह एक क्रान्ति ही है। कई बार उद्बोधन देने हेतु वेदमंत्र आधा अधूरा ध्यान आ जाता है, पर जब तक पूरा स्मरण न हो उद्धृत कैसे करें? अब सही वेदमंत्र तथा उसका अर्थ भी अंगुली के एक इशारे भर जितना दूर है। तकनीकी क्षमता का इससे अधिक सदुपयोग हो सकता है हम नहीं समझते। इसके अतिरिक्त आर्य विद्वानों, विशेष रूप से आचार्य चन्द्रदत्त शर्मा की सहायता से मन्त्र शुद्धि आदि को पूर्ण क्षमता से संपादित किया गया है। आदरणीय धर्मपाल जी, सुषमाजी अग्रवाल, कोलकाता, बाबू दीनदयाल जी कोलकाता आदि भामाशाहों ने इस परियोजना को धन का अभाव नहीं होने दिया।

विशेष बात यह है कि आज जब हर कोई सोशल मीडिया पर कार्य से अधिक वाहवाही के इच्छुक दिखाई देते हैं इस टीम ने सिर्फ कार्य पर ध्यान दिया है। ये सभी महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं, इनका कार्य अत्यंत उपादेय सिद्ध होने वाला है। -भवानीदास आर्य

सत्यार्थ-पीयूष

प्रार्थना का प्रकार

प्रार्थना का प्रकार- इसको भी एक लौकिक उदाहरण से समझने का प्रयास करें। हम एक योजना बनाते हैं, उसकी वित्तीय उपलब्धताओं तथा आवश्यकताओं का विशद् विश्लेषण करते हैं और उस पर कार्य प्रारम्भ कर अपनी उस प्रोजेक्ट के प्रति गंभीरता को प्रदर्शित करते हैं तब अगर हम किसी श्रेष्ठि के पास अनुदान माँगने जाते हैं तो वह हमारे पुरुषार्थ का मूल्यांकन करते हुए अनुदान अवश्य देगा। इसके उलट बिना किसी पूर्व तैयारी व स्वयं कोई पुरुषार्थ किये जबानी जमा खर्च के आधार पर आप अनुदान मागेंगे, तो शायद ही कोई देगा।

इस संदर्भ में एक उपयोगी उदाहरण आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् महात्मा नारायण स्वामी जी ने दिया है जो पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है-

'छोटे बालक में जब घुटने के बल चलने की शक्ति आ जाती है तो वह भूख लगने पर घिसटते घिसटते माता तक पहुँच जाता है और पास पहुँचकर माता के मुख की ओर आशाभारी दृष्टि से देखता है। उस अबोध शिशु के देखने की मूक भाषा का अर्थ यह है कि माता, तेरी छाती का दुग्धामृत पीने के लिए मुझमें जो शक्ति थी, मैंने व्यय कर दी। अब मेरे स्तनों तक तो मैं तभी पहुँच सकता हूँ जब तू ही कृपा करके अपने हाथों का सहारा देकर मुझे अपनी छाती तक उठावेगी। माता ने बच्चे की आँखों में इस भाषा को पढ़ा और भाव विह्वल होकर बच्चे को उठाकर छाती से लगा लिया। ठीक यही बात उस जगदम्बा के लिये भी है। एक सच्चा भक्त धर्म मार्ग पर चलता हुआ पूर्ण पुरुषार्थ के पश्चात् दीन होकर जब कहता है- हे प्रभो! मैंने धर्म के मार्ग पर चलते हुए अपना शक्ति भर पुरुषार्थ कर लिया है अब तो तुम्हीं कृपा करो तो दयालु प्रभु अवश्य कृपा करता है।

इसीलिये महर्षिवर देव दयानन्द अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं- 'जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है उसको वैसा ही वर्तमान करना चाहिये अर्थात् जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिये परमेश्वर की प्रार्थना करे, उसके लिये जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करे अर्थात् अपने पुरुषार्थ के उपरान्त ही प्रार्थना करनी चाहिये अन्यथा मृग मरीचिका में भटकना मात्र ही होगा।

प्रार्थना ईश्वर से ही करें

तमित्सखित्व ईमहे तं राये तं सुवीर्ये।
स क्र उत न: शकदिन्द्रो वसु दयमान:।। - ऋ. १/१०/६।।

सब मनुष्यों को, समस्त शुभ गुणों की प्राप्ति के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिये अन्य से नहीं। क्यों? उस अद्वितीय, सबके मित्र, परम् ऐश्वर्यशाली और अनन्त शक्तिशाली ईश्वर का ही यह सब देने में सामर्थ्य होने के कारण।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

वो था शुद्ध चैतन्य था मूलशंकर

वो मिश्री से मीठा था खारा नहीं था।
दयानन्द सा कोई प्यारा नहीं था।
उलट कर पलट कर किया सत्य सीधा,
महाक्रान्ति था तुच्छ नारा नहीं था।
दिलों को दिमागों को झकझोरता था,
वो सागर था, सूखा किनारा नहीं था।
कोई वेद भगवान को गालियाँ दे,
दयानन्द को यह गवारा नहीं था।
उसे रास आता नहीं था अँधेरा,
वो वेदों का सूरज था, तारा नहीं था।

फँसा चक्रव्यूहों में, तोड़े निरन्तर,
वो योद्धा अनूठा दुतारा नहीं था।
दयानन्द आता नहीं विश्व में तो,
हमारा कहीं भी गुजारा नहीं था।
हरिद्वार में दी उलट आके गंगा,
निहत्था करों में दुधारा नहीं था।
थे जितने भी विधवा दलित बेसहारा,
दयानन्द जैसा सहारा नहीं था।
वो सत्यार्थ देकर गया विश्व नभ को,
सभी कुछ नकद था उधारा नहीं था।

मिले दुष्ट मिलकर किया था वितंडा,
दयानन्द काशी में हारा नहीं था।
विदा के समय शान्त मन से जो बोला,
कहीं पर भी ऐसा नजारा नहीं था।
दवा के बहाने से विष ही बढ़ाया,
किसी माँ का क्या वो दुलारा नहीं था।
अकेला ही सबको वो ललकारता था,
जुझारू किसी को पुकारा नहीं था।
वो था शुद्ध चैतन्य था मूलशंकर,
'मनीषी' वो मिलना दुबारा नहीं था।

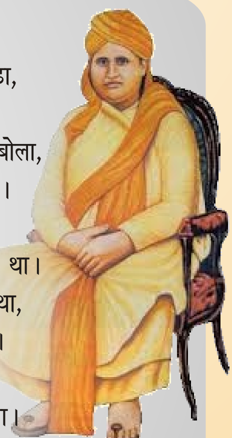

- डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी'

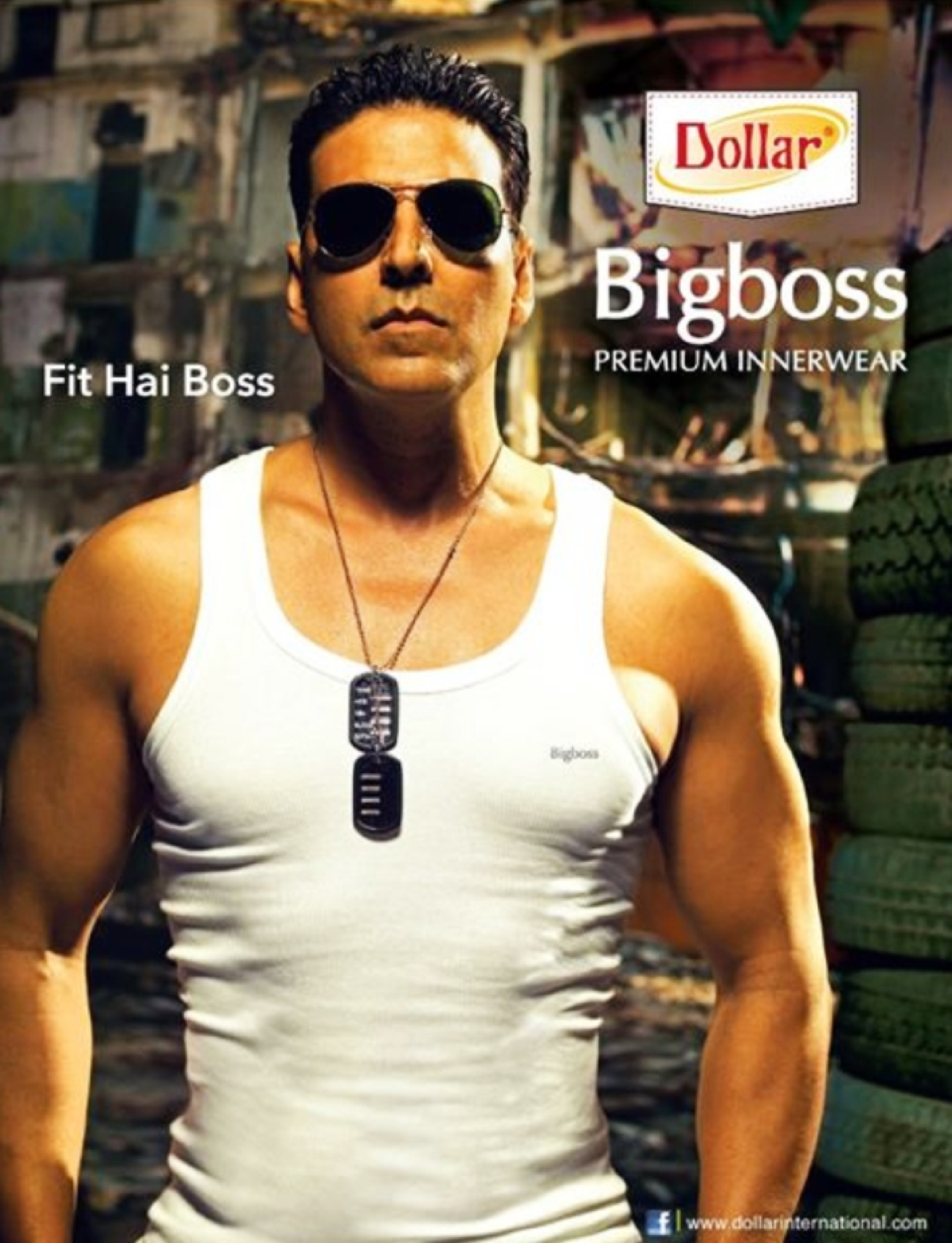
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 March-2021 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

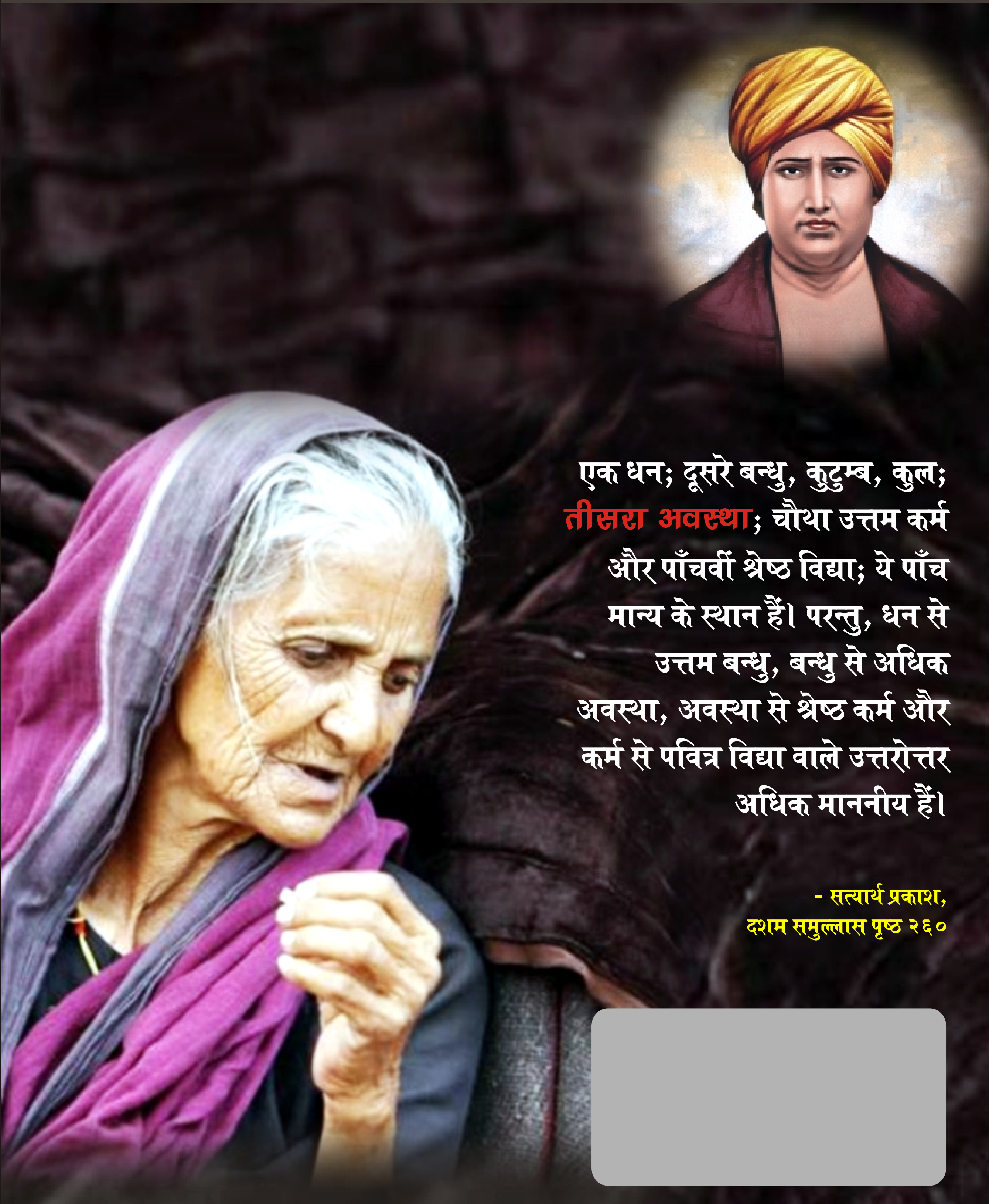

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर